ज्ञानामृत

अगस्त, 1984
वर्ष 20 ❋ अंक 2
मूल्य 1.35

राजस्थान विधान सभा के कुछ सदस्य तथा सार्वजनिक सस्थानों के सदस्य पांडव भवन, माउंट आबू में पधारे । वे ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि तथा अन्य के साथ चित्र में है ।

नेरोबी में भागिनी समाज में राजयोग के विशेष कार्यक्रम में मंच पर ब्र.कु. ज्योत्सना, एलीजिबथ तथा इन्द्रा विराजमान है । लगभग १०० महिलाओं ने इस में भाग लिया ।

मॉरक्को के राजदूत माननीय भ्राता लारबी मौलीन, साऊथ दिल्ली संग्रहालय में पधारे, वे ब्र. कु. दादी चन्द्रमणि तथा ब्र.कु. शान्ति के साथ दिखाई दे रहे हैं ।

गुजरात के सुप्रसिद्ध कवि भ्राता सुन्दरम जी को जूनागढ़ में आध्यात्मिक संग्रहालय में चित्रों की व्याख्या करती हुई ब्र.कु. विजया बहन ।

चान्दनी चौक (दिल्ली) सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित मानव जागृति सम्मेलन में प्रवचन करती हुई ब्र.कु. इन्द्रा बहन । मंच पर (बाएं से) ब्र.कु. विमला तथा पद्मश्री बहन सुरेन्द्र गुप्ता विराजमान हैं ।

नारायण गांव में सेवा केन्द्र के मकान के उद्घाटन अवसर पर दीप → प्रज्जवलित करती हुई ब्र.कु. दादी प्रकाश मणि जी । उन का साथ दे रहे हैं ब्र.कु. सुन्दरी जी, वेदान्ताचार्य स्वामी कृष्णानन्द जी-बृजशान्ता जी तथा अन्य ।

गुलबर्गा में आध्यात्मिक समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित करके कर रहे हैं भ्राता जे.पी. शर्मा जी, संभागीय आयुक्त । साथ में इन्नासप्पा ज़ि. सत्र न्यायाधीश, ब्र.कु. प्रेम तथा ब्र.कु. विजया बहन उपस्थित हैं ।

रायपुर में अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग एवं आध्यात्मिक विकास केन्द्र के भवन के लिये 'भूमि पावन' कार्यक्रम के पश्चात् नारियल तोड़ते हुए 'दैनिक नवभारत' रायपुर के सम्पादक भ्राता गोवन्द लाल वोराजी । साथ में ब्र.कु. ओमप्रकाश जी तथा अन्य बहन भाई खड़े हैं ।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

भोपाल में मध्यप्रदेश के राजभवन में माननीय राज्यपाल भ्राता के.एम. चांडी जी को नव पद ग्रहण करने के बधाई समारोह में ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. अवधेश जी,ब्र.कु. महेन्द्र जी, ब्र. कु. प्रतिभा जी साथ में हैं । →

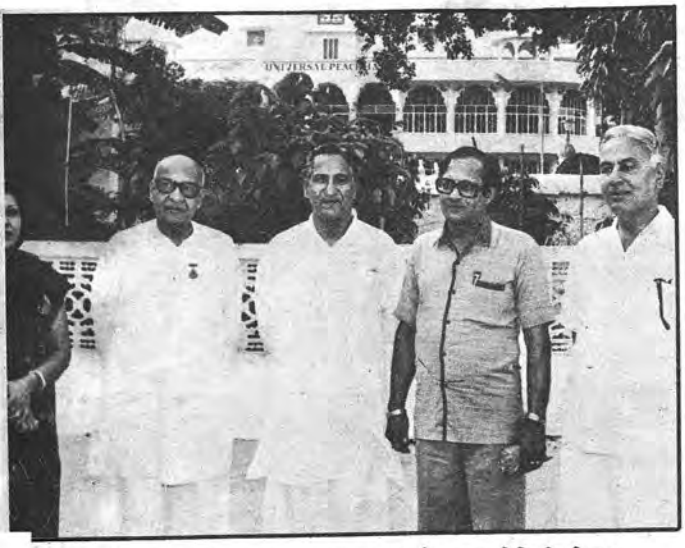

भ्राता राजेन्द्र अवस्थी, सम्पादक 'कादम्बनी ' तथा सरोजिनी प्रीतम पांडव भवन, माउंट आबू में पधारने पर वे ब्र.कु. निर्वैर, भ्राता लालचन्द वत्स तथा ब्र.कु. रावल जी के साथ खड़े हैं ।

राजस्थान के विधि मन्त्री पाण्डव भवन माउंट आबू में पधारे । ब्र. कु. लाल चन्द वत्स उन्हें अपने ज्ञान योग के अनुभव सुनाते हुए ।

कलोल रोटरी इन्टरनेशनल में ब्र.कु. शारदा प्रवचन करते हुए ।

आदिवासी लोगों का एक ग्रुप पाण्डव भवन माउंट आबू में ब्र.कु. दादी रत्न मोहिनी तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनों के साथ । →

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय		पृष्ठ
१.	राखी का त्यौहार सच्ची स्वतंत्रता का प्रतीक और जन्माष्टमी का अग्रदूत (मुख-पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित)	...	१
२.	रक्षा बन्धन—स्वतंत्रता दिवस—जन्माष्टमी का रूप अनूप (सम्पादकीय)	...	२
३.	आओ···राखी बाँध	...	५
४.	राखी कैसे मनायें।	...	८
५.	श्रीकृष्ण ही श्रीनारायण थे, उनका जन्म सतयुग में हुआ था न कि द्वापर में	...	९
६.	बेपदी का लोटा	...	१३
७.	सुहाना बन्धन (कविता)	...	१६
८.	रोना नहीं तुम	...	१७
९.	योगी करता नजर निहाल (कविता)	...	१८
१०.	यह राखी है सुख का सार (गीत)	...	१९
११.	रूहानी डॉक्टर	...	२१
१२.	सचित्र सेवा समाचार	...	२३
१३.	पवित्रता से ही बन्धनों से स्वतंत्रता	...	२५
१४.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	...	३०

मुख-पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित

राखी का त्यौहार सच्ची स्वतंत्रता का प्रतीक और जन्माष्टमी का अग्रदूत

यद्यपि राखी रेशम या सूत की एक डोरी मात्र होती है तथापि इसका महत्त्व बहुत उच्च है। यह मनुष्य द्वारा मनोविकारों से मुक्त होने की प्रतिज्ञा अथवा विश्व को दुःख तथा अशान्ति से मुक्त करने की दृढ़ भावना की द्योतक है।

मुख पृष्ठ पर राखी का चित्र ऊपर-उच्च स्थान पर—ऐसे दिव्य प्रकाश की रश्मियाँ उत्कीर्ण करते हुए दिखाया गया है जो मनुष्य के मन को दिव्यता के लिये प्रेरित करती हैं। ये किरणें मनुष्य के मनोबल को बढ़ाती हैं और यह राखी मनुष्य को उत्साहित करती है कि वह ऐसा आध्यात्मिक पुरुषार्थ करे कि वह अज्ञानता, बुरी आदतों, गलत विश्वासों तथा निरर्थक रस्मों की जंजीरों से स्वयं को मुक्त करे। चित्र में भूमण्डल पर रस्सियों से जकड़ा हुआ मनुष्य इस बात का प्रतीक है कि अब सारा विश्व दुःख तथा अशान्ति के बन्धनों में जकड़ा हुआ है। जब मनुष्य पवित्रता की सूचक राखी को बान्धता है तो उसके सभी बन्धन टूक-टूक हो जाते हैं और तब सतयुग पूर्ण स्वतंत्र विश्व का उदय होता है जहाँ श्रीकृष्ण का सुख-शान्तिमय स्वराज्य होता है।

अतः इस बार राखी को रक्षा बन्धन, स्वतंत्रता दिवस तथा जन्माष्टमी--तीनों को सम्मिलित रूप में मनाया जाय। पवित्रता की प्रतिज्ञा लेकर पुराने संस्कारों आदि के बन्धनों से मुक्त होने और नये विश्व की पुनर्स्थापना के पुरुषार्थ के रूप में इसे लिया जाय।

रक्षाबन्धन □ स्वतन्त्रता दिवस □ जन्माष्टमी का रूप अनूप

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भारत के लाखों-करोड़ों लोग रक्षाबन्धन का त्योहार तो मनायेंगे ही परन्तु आज विश्व की जो परिस्थितियाँ हैं, उनके संदर्भ में यह त्योहार उस भाव को लेकर मनाना कि जिस भाव में प्राय: लोग मनाते आए हैं, विचित्र-सा लगता है। अब जो एटम और हाइड्रोजन बम बन गये हैं, उनसे कौन, किसकी और कैसे रक्षा करेगा? रूस और अमरीका-जैसे बड़े देश जिनके पास अणु बम और उद्जन बम-जैसे अस्त्र-शस्त्र हैं, स्वयं वे भी अपनी सुरक्षा के बारे में चिन्तित हैं, तब इक्के-दुक्के मनुष्य की रक्षा की तो बात ही क्या करनी। आज तो धर्मनीति और राजनीति ही ऐसे हो चुके हैं कि उनमें उग्रवादिता आ चुकी है और हिंसा-प्रिय लोगों के हाथों जो आ जाए, वही उनके क्रोध और घृणा का शिकार हो जाता है। अत: अब वह ज़माना ही नहीं रहा कि लोग निहत्थे पर, सोये हुए पर, निर्बल पर, निर्दोष पर, न लड़ना चाहने वाले पर वार नहीं करते थे बल्कि अब तो 'मरो या मारो' का प्रण लेने वाले दल (Suicide squad) बने हुए हैं। आज जो वायु दुर्घटना, सड़क दुर्घटना, पर्यावरण प्रदूषण आदि-आदि पीड़ा जनक मृत्यु के साधन बने हुए हैं, वे ५०-१०० वर्ष पहले ऐसे थे ही कहाँ ? अत: वास्तव में रक्षा की बात तो बुराई से बचने और बचाने की बात है क्योंकि बुराई ही मनुष्य को ले डूबती है और अच्छाई ही मनुष्य के संकट का निवारण करती है। "कर भला तो हो भला" का फार्मूला ही रक्षा का फार्मूला है। यदि मनुष्य इस बन्धन में अपने को बांध ले तो वह रक्षा का पात्र बन जाता है।

कोई कह सकता है कि बीसवीं सदी में इस आठवें दशक की कोई बहन अपने भाई को रक्षा के लिए तो बन्धन नहीं बाँधती बल्कि स्नेह के सूचक के रूप में रेशम की डोरी बाँधती है। यह बात तो सभी जानते हैं कि अब कोई मल्लयुद्ध का ज़माना नहीं है कि रक्षा की बात कोई आसान हो न ही यह कोई तीर-तलवार का दौर है बल्कि बहन-भाई का जो अनोखा नाता है, उस सुमधुर नाते की याद यह पर्व हमें दिलाता है। ऐसे स्नेह-भरे पर्व मनाने से ही तो जीवन में कोई राग-रंगत आ जाती है वर्ना तो सब फीका ही फीका है। यह तर्क तो ठीक है परन्तु जिस स्नेह से जीवन में मधुर रस भरता है, वह स्नेह भी आज कहाँ है। मधुरता उस स्नेह में होती है जिसमें पवित्रता और नि:स्वार्थता हो तथा आत्मीयता हो और ऐसा स्नेह तो केवल योगीजनों के जीवन में ही हो सकता है। जिसके जीवन में लोभ हो, क्षोभ हो, भोग हो या प्रभु से वियोग हो, उसके जीवन में पवित्रता और मधुरता नामक योगज अथवा ईश्वर-प्रदत्त गुण भला कैसे हो सकते हैं ? अत: रक्षाबन्धन को मनाने की सार्थकता इसी में है कि हम पहले पवित्रता का सूत्र बाँधे ताकि हम में नि:स्वार्थता, मधुरता और सच्चे स्नेह का संचार हो। परन्तु, पवित्रता की जननी तो आत्मिक दृष्टि है। अत: आत्मा के स्वरूप में स्थित होकर रूहानियत के नाते पवित्रता और शुद्ध स्नेह का बंधन बाँधना ही सच्चा रक्षाबन्धन है। इससे मनुष्य के सब बन्धन कट सकते हैं।

स्वतन्त्रता

हम बन्धन की बात कर रहे थे। आज मनुष्य अनेक प्रकार के बन्धनों में बँधा है। इनमें से एक बन्धन उसके अपने ही संस्कारों का बन्धन है। मनुष्य के अर्ध-चेतन (Sub-Conscious) अथवा अचेतन (Unconscious) मन में अनेक प्रकार की कामनाएँ, वासनाएँ, तृष्णाएँ और ईर्ष्या-द्वेष तथा मोह-ममता से रंगी हुई भावनाएँ एक समुद्र के नीचे के संसार की तरह से अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। वे मनुष्य के चेतन व्यवहार को भी प्रभावित करती हैं। जैसे सागर के तट पर खड़े होने से सागर के तल

पर के जीव-जन्तुओं, झाड़ी-झाँखड़ और कंकरों-पत्थरों का पता नहीं चलता वैसे ही बिन्दु आत्मा के सिन्धु मन में भी कोटि-कोटि 'संस्कार-कण' अथवा कुसंस्कारों के झाड़ी-झाँखड़ भरे पड़े हैं परन्तु मनुष्य को बाहर से उसका पता नहीं चलता। उन सभी ने मनुष्य के व्यवहार को ऐसा जकड़ रखा है कि जैसे सरकार कई कत्ल करने वाले व्यक्ति को भी हथ-कड़ियों और पद-सांकलों में उतना नहीं जकड़ती परन्तु आश्चर्य है कि जकड़ा हुआ मनुष्य अकड़ कर कहता है कि मैंने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली। यह ठीक वैसे ही है जैसे अफ़ीम या शराब के झूठे नशे में कोई व्यक्ति समझता है कि ताजमहल बनाने वाला शाह-ए- आलम मैं हूँ। आज मनुष्य अपनी अनेक आदतों का गुलाम है, रिश्तेदारों की रस्सियों में जकड़ा हुआ है, पुरानी स्मृतियों की ज़जीरों में बंधा हुआ है, समाज के दूषित वातावरण के घेराव में घिरा है और इस प्रकार हर प्रकार से परतन्त्र है। सच्ची स्वतन्त्रता तो उस स्थिति का नाम है जब मनुष्य का मन पुराने दूषित संस्कारों से, विकारों से, लाचारियों से, अत्याचारियों से, बीमारियों से, और दुःख तथा अशान्ति के हर रूप-प्रारूप से छूटा हुआ हो ताकि न उसे निर्धनता सताती हो, न उसकी काया कष्ट पाती हो, न उसकी आत्मा दण्ड पाती हो। आज जबकि संस्कार में हाहाकार है और मनुष्य कृत्रिम और लाचारी का जीवन जी रहा है, तब सच्ची स्वतन्त्रता कहाँ है ? मन के सूक्ष्म बन्धनों को कूट-कूट करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग ही हथौड़ी और छैनी है अथवा दिव्य गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा ही काया-कल्प करने वाले औषधि और उपचार हैं। उन सबके बिना प्राप्त हुई-हुई स्वतन्त्रता को स्वतन्त्रता कहना गोया हाथ, पाँव, आँख, कान आदि-आदि से अंग-भंग हुई-हुई अथवा खण्डित हुई मूर्त्ति को अपनी इष्ट देवी मानना है।

परन्तु हम जानते हैं कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भारतवासी हर नगर, महानगर में और देश की तथा प्रदेशों की अपनी-अपनी राजधानी में तिरंगा झण्डा लहराकर जन गण मन अधिनायक··· गाकर स्वतन्त्रता दिवस धार्मिक रस्मों की तरह मना लेंगे। क्या ही अच्छा हो कि लोग तिरंगे से ज्ञान, योग और पवित्रता की प्रेरणा लें। वे श्वेत को पवित्रता का, हरे को ज्ञान द्वारा हरे-भरे होने का और केसरी को योग तथा त्याग का और संन्यसत मनोवृत्तियों का प्रतीक मानें तथा 'जन गण मन अधिनायक' परमपिता शिव को तथा भारत की पवित्र प्राचीन गरिमा को याद करते हुए, 'हिन्द' को विकारों पर 'जय' प्राप्त करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करें।

जन्माष्टमी

जब हम उपरोक्त प्रकार की स्वतन्त्रता मनायगे और सच्ची राखी बाँधेंगे तब हमारा एक नया जन्म होगा जिसे हम आध्यात्मिक जन्म (Spiritual Birth) नव चेतना (New Awakening) अथवा आत्मिक उज्जीवन (Spiritual Rejuvenation) कह सकते हैं। अज्ञान रूपी घोर रात्रि में इस प्रकार का जागरण ही नर को नारायण की याद दिलाने वाला अथवा श्री कृष्ण या श्री नारायण के वैकुण्ठधाम की ओर ले जाने वाला होता है।

लेकिन आज होता कुछ और ही है। विशेष अष्ठमी पर मध्य रात्रि तक कायिक (Physical) से जागकर लोग श्रीकृष्ण के जन्म को मना लेते हैं और खीर, पूरी अथवा बूंदी, बर्फी खाकर फिर सो जाते हैं ! वे यह भी नहीं सोचते कि जिन बातों को मानकर वे यह त्योहार मनाते हैं, उन बातों में परस्पर कहाँ तक तालमेल हैं और वे कहाँ तक विवेक संगत हैं।

उदाहरण के तौर पर श्री कृष्ण की जन्म-जीवनी और कर्म-कथा की शुरूआत पर ही विचार कीजिए। श्रीमद्भागवद् आदि ग्रन्थों में लिखा है और लोग भी ऐसा ही मानते हैं कि जब कंस अपनी बहन देवकी का विवाह वसुदेव से कर चुका और खुशियों में झूमने लगा, तब एक आकाशवाणी हुई कि-"अरे कंस, तू मिथ्या खुशी मना रहा है क्योंकि तेरी इस बहन से आठवीं सन्तान के रूप में जो पुत्र पैदा होगा, वह तेरा विनाश करेगा।" अब आप ही सोचिए कि हमारे यहाँ तो 'आकाशवाणी' ऑल इण्डिया रेडियो से प्रसारित समाचार, वार्त्ता आदि

को कहते हैं, अब यह पुराने ज़माने में दूसरी आकाशवाणी कैसे हो गई ? यदि कहा जाए कि ईश्वरीय वाणी को आकाशवाणी कहा गया था तो ईश्वर को तो तब लोग सर्वव्यापक मानते थे, जैसे कि आज भी मानते हैं; तब आकाश से अर्थात् ऊपर से किसकी वाणी आई ? क्या परमात्मा ऊपर रहता है ? यदि हाँ तो वह सर्वव्यापक कैसे ? यदि नहीं तो आकाशवाणी कैसी ? यदि कहा जाए कि आकाश का अर्थ आसमान (Sky) या अन्तरिक्ष से नहीं है बल्कि 'रिक्त स्थान' से हैं तो सर्वव्यापक परमात्मा से भला रिक्त स्थान कैसा ? और ज्योति-स्वरूप सर्वव्यापक परमात्मा की वाणी कैसे ? वाणी तो मुख से विनिसृत ध्वनि तरंगों अथवा उच्चारित शब्दों-वाक्यों का नाम है। यदि कहा जाए कि वाणी तो अव्यक्त थी और मन के द्वारा सुनी जा सकने वाली ईश्वरीय प्रेरणा थी तो कंस जैसे दुराचारी भ्रष्ट बुद्धि व्यक्ति को ईश्वरीय प्रेरणा, जो कि केवल योग-स्थित लोगों को ही प्राप्त होती है, कैसे सुनाई दे गई ?

फिर, सोचने की बात यह भी है कि आठवें बच्चे का नाम लेकर पहले सात बच्चों को मरवाने का दोष किस पर और गोकुल के अनेक बच्चों की हत्या का पाप किस पर ? यदि यह कहा जाए कि इस प्रकार से ही कंस के पाप का घड़ा भरना था और तभी उसका विनाश संभावित था तब प्रश्न उठता है कि किसी को पाप के लिए उकसाहट या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इशारा देना भी तो अपराधी का साथी बनना है। यही वाणी देवकी के ७ बच्चों के जन्म के बाद भी हो सकती थी। इससे पहले इतने बच्चे मरवा देने की बात की इस तर्क से पुष्टि करना कि इससे उसके पाप का घड़ा भरना था, गोया घड़ा भरने में उसकी मदद करना है। कल्याणकारी परमात्मा की आकाशवाणी मनुष्य को सन्मार्ग पर लगाने वाली तथा उसे सद्बुद्धि देने वाली होनी चाहिए और होती है। इसलिए लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें असत् से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाइये (तमसो मा ज्योतिर्गमय···)। परन्तु यह वाणी तो कंस की बुद्धि में और अन्धकार भरने वाली तथा उसे मृत्यु की ओर ले जाने वाली थी ! यदि यह कहा जाए कि स्वयं भगवान द्वारा मृत्यु को प्राप्त होना तो भाग्य का एक चिह्न है और मुक्ति का एक साधन है, तो फिर प्रश्न उठता है कि भगवान का यह पक्षपात केवल कंस के साथ ही क्यों ? संसार की जेलों में इतने अपराधी भरे पड़े हैं और पिछले कई वर्षों में भगवान ने किसी भी जेल में पधारकर, किसी महा अपराधी के साथ मल्लयुद्ध करके उसे मुक्का मार कर मुक्त करने की कोशिश क्यों नहीं की ? दूसरे, संन्यासी और योगी लोग यों ही आंख मूंदकर, माला का मणका फेर-फेर कर मुक्ति के लिए माथा-पच्ची कर रहे हैं, वे मुक्त हस्त होकर, मार-धाड़ करके, कुछ वर्ष मौज मनाकर अन्त में भगवान जी द्वारा मुक्का खाकर मुक्त होने की मनोकामना क्यों नहीं पूर्ण करते ?

कहने का भाव यह है कि वास्तव में बात ही कुछ और है। भगवान के समान गुणों वाले श्री कृष्ण के जन्म के समय तो यह पृथ्वी ही वकुण्ठ अथवा स्वर्ग थी। पृथ्वी पर उनके पुण्य पाँव पड़ने पर कंस-जैसे निर्दयी व्यक्ति भला हो भी कैसे सकते थे ? श्रीकृष्ण के जन्म और भगवान के अवतरण की बात ही कुछ और है जो अन्यत्र इस पत्रिका में संक्षेप में कुछ लेखों में दी गई है।

—जगदीश

आओ...राखी बाँधें

ब्र० कु० सूरजकुमार, आबू

तो आइये हम अपने हस्त प्रभु के आगे बढ़ा दें और उस परम पावन परमपिता से राखी बन्धवाएँ। राखी बन्धवाकर 'पावन भव' का वरदान लें, ताकि मन की गन्दगी दूर हो···मन आलोकित हो, जीवन से तनाव हटे और घर-घर में सुख चैन की बंसी बजे।

जैसे प्रति वर्ष राखी का त्यौहार, संसार में भाई-बहन के प्रेम की स्मृतियाँ ताजा कर देता है, वैसे ही यह पर्व हम ब्राह्मण कुल भूषणों के मन में दिव्यता का बाँध बाँध देता है। इस पर्व के दिन ज्यों-ज्यों समीप आते हैं, मन में एक सूक्ष्म परिवर्तन की धारा बहने लगती है, मन कुछ दृढ़ संकल्प करने लगता है। यह दिन हम राजयोगियों के लिए वरदान दिवस है। यह पर्व मनुष्य के मन के ईष्या, द्वेष व वैर-भाव के गन्दे नालों को सुखा कर, उनमें प्रेम की गंगा बहाकर मानव में मानवता उजागर करता है।

प्रति वर्ष भारत में यह त्यौहार अति उमंग के साथ मनाया जाता है। यह पर्व भारत देश की पावनता की यादगर है। इस दिन बहनें अपने भाइयों को राखी बाँधती हैं। परन्तु अब यह पर्व एक परम्परा मात्र बनकर ही रह गया है। इसके पीछे छिपे रहस्य लुप्त हो गये हैं। इसका मानव-उत्थान से क्या सम्बन्ध है—यह ज्ञान भी कलियुग के अन्धकार में लोप हो चुका है। इसका आरम्भ कल्प के अन्त में—जब मानव अपनी पवित्रता को पर्णतया खो चुका था, तब परमात्मा ने मनुष्यों को पावन बनाने के लिए पवित्रता की राखी बाँध कर किया था और मानव पुनः धर्म व चरित्र की सर्वोच्च स्थिति पर पहुँचा था, विश्व स्वर्ग बना था। स्वयं परमात्मा ने राखी बाँधकर मनुष्य से उसके मनोविकारों की खर्ची माँगी थी और जिन्होंने यह खर्ची दी वे स्वर्ग के राज्य भाग्य के अधिकारी बने थे।

अब ईश्वर पुनः राखी बाँधते हैं

बहनों द्वारा राखी बँधवाकर तो प्रत्येक मनुष्य हर्ष का अनुभव करता ही है; परन्तु समय का वरदान है, कल्प का पुनः अन्त है जबकि पावनता के सागर प्रभु स्वयं मनुष्य को राखी बाँध रहे हैं। जिन्होंने परमात्मा से राखी बँधवाई है, उनके अतीन्द्रिय सुखों का कैसे वर्णन करें! यह राखी, मात्र परम्परा पूर्ण करने हेतु नहीं बल्कि मानव को पावन बनाने के लिए हैं और परमात्मा पुनः वही मनोविकारों की खर्ची माँग रहे हैं। इस खर्ची को देने से मनुष्य के सर्व भण्डार भरपूर हो जाते हैं।

आओ परमात्मा द्वारा राखी बँधवायें

तो आइये हम अपने हस्त प्रभु के आगे बढ़ा दें और उस परम पावन परमपिता से राखी बन्धवाएँ। राखी बन्धवाकर 'पावन भव' का वरदान लें, ताकि मन की गन्दगी दूर हो···मन आलोकित हो, जीवन से तनाव हटे और घर-घर में सुख चैन की बंसी बजे।

वे आत्माएँ जो परमात्मा द्वारा राखी का कंगन बँधवाते हैं, यम की जंजीरों से छूट जाते हैं, उनके सिर पर प्रभु के आशीर्वाद की छाया सदा रहने लगती है। उनके तन मन के क्लेश मिट जाते हैं। तो आओ जीवन का यह सर्वश्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करें जो पूरे कल्प में केवल एक बार ही हमारे द्वार पर आता है।

परन्तु वे सभी श्रेष्ठ आत्माएँ जो भगवान् से राखी बँधवा चुकी हैं और जिन्होंने मनोविकारों की आहुति भी दे दी है, इस बार उस दाता को क्या खर्ची देंगे? तो आओ, आज राखी के प्रतिज्ञा-दिवस पर हम सभी पवित्र ब्राह्मण अपने कल्याणकारी परमपिता के आगे कुछ शपथ लें और मन में

दृढ़ता धारण करें।

आओ···भगवान् की शुभ-कामना पूर्ण करें

जबकि विश्व में चारों ओर हाहाकार सुनाई दे रहा है, अशान्ति व दुखों के बादल मँडरा रहे हैं, विकारों की आधियाँ चल रही हैं, मानव-प्रेम का दिवाला निकल चुका है, मनुष्य में राक्षसी प्रवृत्ति जोर पकड़ती जा रही है, धर्म मनुष्य को नास्तिकता की ओर प्रेरित कर रहा है, सम्पूर्ण विश्व में आतंक-कारी प्रवृत्तियाँ फैलती जा रही हैं, अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ रहा है और शस्त्रों की होड़ विश्व को विनाश के समीप पहुँचा रही है तो हम ज्ञान-युक्त व योग-युक्त आत्माओं का क्या कर्त्तव्य है ? हमसे हमारे परमपिता क्या खर्ची चाहते हैं ?

हमारे प्राणेश्वर परमात्मा हमसे चाहते हैं कि हम अपनी आत्मिक ज्योति इतनी जगायें, जो अन्ध-कार में भटकते हुए मनुष्यों को प्रकाश की किरणें प्राप्त हों। वे चाहते हैं कि अब हम लाइट हाउस बनकर सभी को मार्ग दिखायें···अब हम शीघ्र ही सम्पन्न बनें ताकि विश्व से इस दुख-अशान्ति व राक्षसी प्रवृतियों का विनाश हो···हम सम्पूर्णता को प्राप्त करें ताकि इस दैव-भूमि से विकारों की गन्दगी नष्ट हो।

कितने महान हैं वे वत्स जिनसे भगवान को कुछ कामना है, सभी की कामनाएँ पूर्ण करने वाले प्रभु अब उन महान आत्माओं से कुछ कामनाएँ कर रहे हैं, जिन पर ये समस्त विश्व आधारित है। जिनका एक-एक संकल्प व एक-एक कर्म विश्व में दिव्यता व पवित्रता की स्थापना करने वाला है। तो आओ हम भगवान की इच्छा पूर्ण करें। भगवान् की इच्छा पूर्ण करके ही हम उसके पुनीत प्यार के अधिकारी बन सकेंगे।

आओ···सम्पूर्णता की ओर चलें

कलियुग भी अपनी सम्पूर्णता की ओर बढ़ रहा है···सतयुग की स्थापना का दिव्य कार्य भी तीव्र गति से सम्पन्नता की ओर बढ़ रहा है तो आओ हम सम्पूर्ण-परमात्मा के वत्स भी सम्पूर्णता की ओर चलें। जो स्वयं संम्पूर्ण है, वही दूसरों को सम्पूर्णता का पथ दिखा सकता है और वह स्वयं हमारा मार्ग प्रदर्शक है तो आओ इस राखी के कंगन को सम्पूर्णता का कंगन बनायें।

मनुष्य की तो कल्पना से भी परे है कि कोई मनुष्य भी सम्पूर्ण बन सकता है ! परन्तु जब सम्पूर्णता का सूर्य विश्व में चमकेगा, जब एक नहीं, चारों ओर अनेक सम्पूर्णता के सूर्य दैदिप्यमान होंगे तो कलियुग के मनुष्यों की अवश्य ही तन्द्रा भंग होगी। वे जागेंगे और आये हुए ज्ञान-सूर्य से प्रकाश की एक किरण प्राप्त कर लेंगे। हमारा सम्पूर्ण स्वरूप ही विश्व से अन्धकार दूर करेगा, विभिन्न दर्शनो में उलझे हुए मनुष्यों को, उसके सत्य स्वरूप का ज्ञान करायेगा, तर्कों के व्यर्थ द्वन्द में अटके मनुष्य को नर्क से निकालकर ईश्वरीय सुखों की अनुभूति करायेगा।

तो आओ शीघ्रतम सम्पूर्णता की इस लम्बी यात्रा को तय करने का दृढ़ संकल्प करें। जब तक हम महान आत्माएँ सम्पूर्णता का पथ तय नहीं करेंगे तो अन्य आत्माएँ भी सम्पूर्णता को बहुत-बहुत दूर अनुभव करेंगी। तो इस राखी से आलस्य व अलबेलेपन की दीवारों को कूदकर तीव्र गति से लक्ष्य को प्राप्त करें।

आओ···सम्पूर्ण पवित्रता का तिलक लगायें

सम्पूर्ण पावन परमात्मा हमारे मस्तक पर सम्पूर्ण पवित्रता का तिलक लगाते हैं। हम उस तिलक को मिटा न दें, बल्कि उसे अविनाशी तिलक बनायें यह स्मृति कि, "परमात्मा ने हमारे मस्तक पर सम्पूर्ण पवित्रता का तिलक लगा दिया है," हमें सम्पूर्ण पवित्रता की ओर ले चलेगी। **सम्पूर्ण पवित्रता सर्वोच्च प्राप्ति व परम आनन्द का बीज है। और वह भी ईश्वरीय सम्पत्ति के रूप में हमें प्राप्त होती है तो आओ उसका परमानन्द ग्रहण करें।**

इस राखी पर्व पर हम सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत लें। हमारे मस्तक पर सुशोभित सम्पूर्ण पवित्रता का तिलक सबको पवित्रता की ओर आकर्षित करे। हमारे जीवन में झलकता पवित्रता का सुख सभी के मन को विकारों से हटा दे। हमारी पवि-त्रता की शक्ति से युक्त वाणी सभी के मुख पवि-

त्रता की ओर मोड़ दे। ऐसा अविनाशी तिलक हमें स्व मस्तक पर धारण करना है।

हमने पवित्रता का कवच पहना है जिसके अन्दर हम पूर्ण सुरक्षित हैं। हमें यह कवच उतारने का संकल्प भी नहीं करना है, प्रत्येक क्षण हम इस कवच को धारण किये रहें। हमें सारे विश्व को पावन बनाना है—जिसके लिए ही हमने जीवन का बलिदान किया है, जिसके लिए ही हमने अपनी राहें मोड़ी हैं, जिसके लिए ही हमने सांसारिक सुख व मान-सम्मान को ठोकर मारी है। तो हमारे स्वप्न में भी कमज़ोरी प्रवेश न हो—ऐसा मजबूत कवच चारों ओर धारण किये रहना है।

वास्तव में तनिक-सी भी अपवित्रता का कारण मन में छुपा हुआ सूक्ष्म रस या वृत्ति का झुकाव है। इसे पहचान कर दूर करें तो सभी प्रकार के आकर्षणों से हम मुक्त हो जाऐंगे। जब हमारी जीवन रूपी गाड़ी सम्पूर्ण पवित्रता की पटरी पर तेज़ी से गतिमान होगी तो उस सुख की कोई भी उपमा नहीं।

आओ···संगम युग को ईश्वरीय-मौजों में बिताये

यह परमात्मा द्वारा बाँधी गई राखी हमें मन की सभी उलझनों से मुक्त करती है। यह दुख-निवारणी व आनन्द-कारणी है। अतः आओ··· आज से संगम युग के बचे हुए अमूल्य क्षणों को ईश्वरीय सुखों में बिताएँ।

भगवान् के साथ रहने के ये ईश्वरीय मौजों के पल जब समाप्त हो जाएंगे तो यादगारें ही रह जाएंगी···और ये दिन स्वप्नवत् प्रतीत होंगे। ये ईश्वरीय आनन्दों का काल केवल अब ही है और पदम भाग्यशाली हैं वे जो इनसे जुड़े हुए हैं। बाकी तो सभी मनुष्य ईश्वरीय आनन्द की खोज में ही आनन्दित हो रहे हैं। तो ज्ञान और एहसास-युक्त आत्माएँ भी यदि इस ईश्वरीय सुखों के काल को विनाशी, सांसारिक व अल्पकालीन प्राप्तियों में बिताती रहेंगे तो भला और कौन, इन ईश्वरीय सुखों का रस ग्रहण करेगा।

सांसारिक तृष्णाओं के पीछे भागना उन आत्माओं की बुद्धिमानी नहीं है जो समय-चक्र को अच्छी तरह समझ चुके हैं। वे अपने से अन्तर्मुखी होकर पूछें कि वे उधर क्यों भाग रहे हैं? उससे उन्हें क्या मिलेगा? जिन चीज़ों के पीछे जन्म-जन्म भागते रहे और प्यास नहीं शान्त हुई, उन्हीं के पीछे अब भी भागने से क्या प्यास बढ़ती नहीं जाएगी? जबकि जन्म-जन्म की प्यास बुझाने वाला सम्मुख है, फिर भी विपरीत दिशा में दौड़ क्यों! तो अब से इस दौड़ को समाप्त करें, ईश्वरीय रंग में रंग जाएं, धन वैभव तो परछाई की तरह पीछे भागेंगे···तुम उनके पीछे मत भागो।

राखी की इस शुभ घड़ी में गहनता से विचार करें···इन महान घड़ियों को हम किन-किन बातों में व्यतीत कर रहे हैं? और मन के उन मार्गों को काटें जो हमने उनके लिए खोल दिये हैं। छोटी-छोटी बातों में, व्यर्थ के चिन्तन में, या किसी भी संघर्ष में इन घड़ियों को बिताना बुद्धिमानी नहीं है। ईश्वरीय प्राप्तियों से स्वयं को इतना सम्पन्न कर लें जो हमें इस ईश्वरीय जीवन में पूर्ण सन्तुष्टता प्राप्त हो। **याद रहे कि यदि भगवान को पाकर भी हमने सन्तोष धन नहीं पाया तो असन्तुष्टता की वृत्ति जन्म-जन्म हमारे साथ चलेगी।**

आओ···हम धर्म-परायणता की राखी बाँधें

राखी हमारे चित्त को शुद्ध करती है। आज जबकि धर्म का नाम-निशान मिटता जा रहा है, धर्म हिंसात्मक प्रवृत्तियों का शिकार बन गया है, धर्म बदनाम हो गया है, "धर्म के नाम पर मिटना है"—लोग इसका गलत अर्थ समझ रहे हैं, ऐसे समय में हम अपने धर्मपरायण स्वरूप के धर्म के सत्य स्वरूप को उजागर करें। धर्म के नाम पर मिटने का अर्थ यह नहीं कि धर्म के नाम से हम मरें और मारें बल्कि हर कीमत पर, सत्य धर्म का पालन करें, यही इसका अभिप्राय है।

धर्म न तो पूजा पाठ, प्रार्थना का नाम है और न विद्वता, माला, तिलक और कर्मकाण्ड का। ये सब तो धर्म के बाह्य स्वरूप हैं। धर्म वह पावन वेदी है जिसमें मानव मन पूर्ण शुद्ध होकर सम्पूर्ण अहिंसा

(शेष पृष्ठ २९ पर)

राखी कैसे मनायें !

श्र० कु० रामकुंवर सिंह, प्रशासन अधिकारी, चन्द्रपुर

पावन राखी, प्रेम की राखी, विकारों से छुड़ाती है,
अमृतधारा बहाकर प्रभु से, स्नेह, प्रीत जुड़ाती है।"

प्राचीनकाल से रक्षाबंधन का त्यौहार भारतवर्ष में बड़े धूमधाम से मनाया जाता आ रहा है। प्रतिवर्ष श्रावण-मास की पूर्णिमा को प्रायः सुबह के समय बहिन स्नानादि कर अपने भाई की कलाई में एक सुन्दर-सी राखी बांध उसे अपने हाथों स्नेह के साथ मीठा खिला तिलक लगाती है और भाई इसके एवज में बहिन को यथाशक्ति कोई उपहार या पैसा आदि देते हुए उसको रक्षा का वचन देता है। सचमुच ऐसी पवित्र, शुभ-कामना और निर्मल-स्नेह को देख सारा वातावरण खुशी में झूम उठता है।

अधिकतर लोग इसे भाई द्वारा बहिन की रक्षा के संकल्प का त्यौहार की ही मान्यता देते हैं। इसके अलावा अबला-सबला को, दुर्बल बलवान को और ब्राह्मण अपने यजमान को राखी बांधते हैं। ब्राह्मण यजमान को राखी बाँध उसकी विजय की कामना करते हुए उसे आशीर्वाद प्रदान करते हैं। बदले में यजमान दक्षिणा-स्वरूप कुछ सामान, धन, वस्त्र या और कोई वस्तु ब्राह्मण को प्रदान करते हैं।

सबके बावजूद भी रक्षाबंधन का त्यौहार एक धार्मिक त्यौहार है। बहिन अपने भाई को राखी बांधती और इसके बदले में भाई से वादा चाहती है कि जीवनभर मेरी किसी भी मुसीबत में रक्षा करते रहना। इसीलिए इसको रक्षाबंधन कहा गया है। दाँये हाथ की बाजू में राखी इसीलिए बांधी जाती है कि यही बाजू उस समय तक उसमें रेशमी-धागा बांधने वाली की रक्षा करती रहे जब तक उसमें शक्ति है, उस बाजू को धारण करने वाले शरीर में प्राण हैं। वर्ष-प्रतिवर्ष इसी बुनियादी पावन रिश्ते की स्मृति में रक्षाबंधन का त्यौहार मनाते चले आ रहे हैं हम सब। स्नेहमयी, प्रेममयो, पवित्रमयी राखी भाई-बहिन के अटूट-सम्बन्ध और महान भारतीय संस्कृति का द्योतक है।

लेकिन वही महान भारतीय संस्कृति अब भारत से लुप्त होती जा रही है। आये-दिन अखबारों में, समाचारों में पढ़ने सुनने को मिलता है कि अमुक जगह एक युवती के साथ सामुहिक व्यभिचार किया गया। वेश्यालयों पर छापे मारे गये। इतनी वेश्याओं को अवैध-रूप से वेश्यावृत्ति के अपराध में पकड़ा गया; आदि-आदि। अरे, शास्त्रों अनुसार एक द्रौपदी का चीर एक दुःशासन ने खींचा तो महाभारत हो गया। एक सीता को रावण ने चुराया तो रामायण की रचना हो गयी। आज हजारों सीतायें और द्रौपद्रियों को हरा जा रहा है, उनका चीर हरण किया जा रहा है तब भी किसी के कान में जूं तक नहीं रेंग रही है ? नगर-नगर गाँव-गाँव में नारी की लाज लूटी जा रहा है। ऐसी घिनौनी वारदातें हों और सुनने के बाद भी अनसुना करना, कोई सुरक्षा नहीं ? सचमुच ही कलियुग का अंत है यह ! तब ही तो ऐसे कारनामे होते हुए भी मानव कान में रूई डाले चुप्पी साधे हुए है।

आज हमें प्रतिज्ञा करनी है कि हमारी स्वयं की बहिन ही नहीं, भारत की हर नारी ही नहीं, विश्व की समूची नारी जाति को बहिन के पवित्र रिश्ते से देखेंगे। हम इस दृष्टि से नारी को देखना शुरू तो करें हमें देख अन्य भी नारी के प्रति यही दृष्टिकोण अपनायेंगे। तब स्वतः ही नारी की लाज खतरे में नहीं पड़ेगी और फिर वास्तव में नारी की पूजा होने लगेगी तथा हमारे मन, वचन, कर्म जो पतित हो गए हैं वे फिर से पवित्र हो जायेंगे। पूरे विश्व में शांति, सुख और पवित्रता होगी।

श्रीकृष्ण ही श्रीनारायण थे, उनका जन्म सतयुग में हुआ था न कि द्वापर में

जन्माष्टमी का अवसर आने पर भारतवर्ष के लोग विशेष रूप से श्रीकृष्ण की चर्चा करते हैं। परन्तु हर वर्ष जन्माष्टमी मनाने, प्रतिदिन श्रीकृष्ण की पूजा करने अथवा नित्यप्रति श्रीकृष्ण का भजन, कीर्त्तन करने के वाद भी मनुष्य के जीवन में तथा देश के वातावरण में भला सुखद परिवर्तन क्यों नहीं आता ? भारत देश में श्रीकृष्ण के अनगिनत मन्दिर हैं, श्रीकृष्ण के अगण्य भक्त हैं, यहाँ हर घर में श्रीकृष्ण के चित्र भी लगे रहते हैं तब भी यहाँ भला श्रीकृष्ण के दिव्यता की छाप मनुष्य के मन पर अंकित क्यों नहीं होती ? श्रीकृष्ण को **'मनमोहन'** मानने वालों का अपना जीवन मनमोहक क्यों नहीं बनता ? अवश्य ही श्रीकृष्ण के बारे में लोगों में कुछ भ्रान्तियाँ हैं अथवा उनके मन में तत्सम्बन्धी ज्ञान की कुछ कमी है वरना श्रीकृष्ण-जैसे सर्वश्रेष्ठ देवता की जीवन-कहानी को जानकर तो मनुष्य को अपना जीवन भी वैसा ही उच्च बनाने की प्रेरणा अवश्य ही मिलनी चाहिए। और हम अपने अनुभव के आधार पर आज कह सकते हैं कि श्रीकृष्ण का जितना उज्ज्वल जीवन था, उनमें जो महान् गुण थे, उनकी जो पूर्ण पावन अवस्था थी, उनके जन्म तथा जीवन में जो विशेषता थी, उसे लोग वैसा नहीं जानते। इसी कारण उनके मन-मलीन हैं, उनका आत्म-बल क्षीण है और उनमें आज धर्म की भावना हीन है तथा पवित्रता का संकल्प भी क्षीण है। अत: जन्माष्टमी के अवसर पर हम आज श्रीकृष्ण की वास्तविक कहानी पर मधुर चर्चा करते हैं ताकि हमारा जीवन भी उनके गुणों को सामने रखकर दिव्य बन जाय।

श्रीकृष्ण का ही दूसरा नाम 'श्रीनारायण' था

श्रीकृष्ण की जीवन-कहानी अथवा श्रीनारायण की जीवन-कहानी की चर्चा करने का एक ही अर्थ है क्योंकि वास्तव में श्रीकृष्ण ही का दूसरा नाम 'श्रीनारायण' था। आप जानते होंगे कि भारत में पहले यह प्रथा थी कि स्वयंवर होने पर वर और वधु दोनों का नाम प्राय: बदल दिया जाता था। इसी प्रथा के अनुसार त्रेता युग में 'जानकीजी' का नाम बदल कर 'श्रीसीताजी' हुआ था। आज तक भी भारत में कई कुलों में यह प्रथा चली आती है। यह प्रथा सतयुग में शुरू हुई थी। इसके अनुसार श्रीकृष्ण का नाम स्वयंवर के पश्चात बदलकर 'श्रीनारायण' हुआ था। परन्तु आज इस रहस्य को न जानने के कारण और श्रीकृष्ण तथा श्रीनारायण के अलग-अलग चित्र और अलग-अलग मन्दिर देखने के कारण लोग भूल से समझते हैं कि श्रीकृष्ण और श्रीनारायण दो अलग-अलग देवता हुए हैं। परन्तु भक्त लोग कीर्त्तन करते समय श्रीकृष्ण से सम्बन्धित जो स्तोत्र आदि गाते हैं, उनकी ओर यदि आप ध्यान दें तो आपको मालूम होगा कि 'श्रीनारायण' नाम भी श्री कृष्ण ही का वाचक है। उदाहरण के तौर पर, भक्त लोग कीर्त्तन करते समय गाते हुए कहते हैं—'श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ, **नारायण**, वासुदेव' ! स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण ही को **'श्रीनारायण'** भी कहा गया है। इसी प्रकार, श्रीमद्भागवत् में भी कई बार श्रीकृष्ण को 'श्रीनारायण' नाम दिया गया है परन्तु आज श्रीकृष्ण को 'श्रीनारायण' मानने वाले लोग भी इस रहस्य को नहीं जानते कि श्रीकृष्ण का यह 'नारायण' नाम स्वयंवर के बाद ही पड़ा था।

अत: अब जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाते समय यह मालूम रहना चाहिए कि श्रीनारायण का जन्मोत्सव भी यही है। आप किंचित सोचिये कि यदि श्रीकृष्ण और श्रीनारायण

दो अलग-अलग देवता होते तो उन दोनों का अलग-अलग ही जन्मदिन मनाया जाता और श्रीनारायण की अपनी अलग ही कोई जीवन-कहानी भी मिलती। परन्तु आप जानते हैं कि न तो श्रीकृष्ण के जन्म-दिन से भिन्न किसी दिन श्रीनारायण का जन्म-दिन ही मनाया जाता है और न ही श्रीनारायण की अलग कोई जीवन-कहानी ही उपलब्ध है, कारण कि वे दोनों एक ही देवता के भिन्न अवस्थाओं के नाम हैं। आपने देखा होगा कि श्री नारायण के चित्रों अथवा मूर्त्तियों में श्रीनारायण का दिव्य विग्रह (शरीर) सदा **प्रौढ़ अवस्था** (बड़ी आयु) **वाला** ही दर्शाया गया होता है यद्यपि श्री कृष्ण के चित्र **किशोर रूप** में तथा मूर्त्तियाँ भी कुमार एवं युवा अवस्था की मिलती हैं। **इसका कारण यही है कि 'श्रीकृष्ण' नाम तो स्वयंवर से पहले का और 'श्री नारायण' नाम स्वयंवर से बाद का था।**

श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में हुआ था न कि द्वापर युग में

अब हम आपको बतायेंगे कि वास्तव में श्रीकृष्ण अथवा श्रीनारायण का जन्म कब हुआ ? श्रीकृष्ण अथवा श्रीनारायण की सुन्दरता, स्वच्छता, पवित्रता, दिव्यता एवं जीवन्मुक्त अवस्था को ध्यान में रखते हुए ही आप श्रीकृष्ण के जन्म और जन्म के समय के विषय में ठीक निर्णय कर सकेंगे। आज भी आप देखते हैं कि श्रीनारायण तथा श्री लक्ष्मी के राज्य-तिलक का दिव्य उत्सव अर्थात दीपावली का त्यौहार आने पर भारतवासी स्वच्छता तथा पवित्रता आदि का खूब प्रबन्ध करते हैं। आप जानते होंगे कि लोगों के मन में यह धारणा बनी हुई है कि यदि घर में किसी भी कोने में स्वच्छता नहीं होगी और प्रकाश नहीं होगा तो वहाँ श्री लक्ष्मी जी आयगी ही नहीं। इसी दृष्टिकोण को अपना कर आप विचार करें कि यदि कुछ क्षणभर के लिए आह्वानार्थ भी स्वच्छता तथा प्रकाश की इतनी आवश्यकता है तो साक्षात श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण, जो कि स्वयंवर से पूर्व श्री राधे और श्रीकृष्ण कहलाते थे, के इस पृथ्वी पर जन्म लेने तथा यहाँ जीवन व्यतीत करने के लिए इस सृष्टि में कितनी पवित्रता और कितना जीवन-प्रकाश चाहिए !

तो स्पष्ट है कि जब हरेक मनुष्यात्मा रूपी दीपक जगा होता है, जब घर-घर में आध्यात्मिक पवित्रता (निर्विकारिता) होती है, जब सभी अपने-अपने विकर्मों का हिसाब-किताब समाप्त करके नये (शुभ) कर्मों का लेखा खोलते हैं और सभी नया ही देह रूपी वस्त्र धारण करते हैं, अर्थात् जब सतयुगी, नयी, पवित्र, जीवन्मुक्त सृष्टि होती है, तब श्रीकृष्ण अथवा नारायण का जन्म होता है। अपवित्र, विकारी एवं म्लेछ दुनिया में श्रीकृष्ण का जन्म मानना भूल है क्योंकि उस सर्वमहान् देवात्मा के लिए तो एक स्वच्छ और आध्यात्मिक वातावरण चाहिए। आप जरा सोचिये कि जबकि देवताओं की प्रतिमाओं के स्थानों (मन्दिरों) में भी स्वच्छता, सुगन्धि और प्रकाश का ख्याल रखा जाता है और अशुद्ध हाथ उन मूर्त्तियों को छू तक भी नहीं सकते तो विचार कीजिये कि साक्षात, साकार श्रीकृष्ण के जन्म के लिए इस सृष्टि में, अर्थात यहाँ रहने वाले लोगों इत्यादि में पवित्रता का होना कितना जरूरी है ? श्रीकृष्ण-जैसी सर्वोत्तम एवं सर्वगुण सम्पन्न मनुष्यात्मा के भोग के लिए तो फल-फूल, आहार-विहार सभी सर्वोत्तम ही चाहिएँ और उनका खान-पान आदि भी शुद्ध मनसा वाले मनुष्यों (देवताओं) ही के हाथों से बने होने चाहिएँ। जभी तो कहावत भी है कि "अपवित्र धरती पर देवता पाओं नहीं धरते।" अतः स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग के प्रारम्भ ही में हुआ क्योंकि सतयुग ही सतोप्रधान युग है।

श्रीकृष्ण को पीपल के पत्ते पर इसलिए दिखाया जाता है कि वह सतयुग में हुए

आपने ऐसे भी चित्र देखे होंगे जिनमें कि श्रीकृष्ण को सागर में तरते हुए पीपल के पत्ते पर चित्रित किया गया होता है। इस विषय में यह भी उल्लेख है कि "सृष्टि के आदि काल में श्रीकृष्ण को पीपल के पत्ते पर देखा गया।" वास्तव में उस चित्र का भी भाव यही है कि श्रीकृष्ण ने सतयुग के आरम्भ में जन्म लिया था। आप जानते हैं कि संसार को **'सागर'** भी कहा जाता है। इस संसार रूपी सागर अर्थात असीम लोक में मनुष्य सृष्टि मानो पीपल (अश्वत्थ) का एक वृक्ष है। ब्रह्मा

और सरस्वती उसके मूल हैं और श्रीकृष्ण उसके पत्ते पर तैर रहे हैं अर्थात इससे अलिप्त और न्यारे होकर उन्होंने इसमें जीवन व्यतीत किया। वे इस सृष्टि के सबसे पहले पत्ते हैं अर्थात उनका जन्म सृष्टि के प्रारम्भ ही में हुआ। अत: "श्रीकृष्ण को सृष्टि के आरम्भ में पीपल के पत्ते पर तरते हुए देखा गया"—इस कथन का अर्थ यह हुआ कि श्रीकृष्ण सतयुग के आदि काल में हुए।

जीवन्मुक्त होने के कारण श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में हुआ

श्रीकृष्ण **जीवन्मुक्त थे**। उन्हें जीवन्बद्ध अवस्था वाला तो कोई भी नहीं मानेगा। कोई भी मनुष्य यह नहीं कह सकता कि श्रीकृष्ण पर पूर्व जन्मों के किन्हीं विकर्मों का बोझ था अथवा कि उनमें मनसा, वाचा या कर्मणा किसी प्रकार की कुछ भी अपवित्रता थी। बल्कि सभी यही कहेंगे, कि श्रीकृष्ण मानसिक विकारों तथा विकर्मों से पूर्णत: मुक्त थे और श्रेष्ठ भाग्य वाले थे। अर्थात् उन्हें पवित्रता (धर्म), धन-धान्य (अर्थ) दीर्घ आयु, निरोगी काया आदि सर्व सुख तथा विकर्मों के बन्धन से मुक्ति पूर्णत: प्राप्त थी। वे सत्त्वगुण की प्रधानता की भी पराकाष्ठा को प्राप्त थे। अत: उस सर्वोच्च प्रारब्ध को भोगने के लिए उनका जन्म ऐसे ही लोक में होना आवश्यक था जहाँ कभी भी अधर्म (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार), दु:ख (गर्भ-जेल, रोग, अकाल मृत्यु, निर्धनता इत्यादि) और अशान्ति (लड़ाई-झगड़ा, मतभेद, द्वेष, कलह आदि), प्राकृतिक आपदाएँ (अति वर्षा, भूकम्प आदि) तथा तमोगुणादि का नाम-निशान भी न होता हो, जहाँ कानों में कोई भी अपशब्द या अशुभ समाचार का शब्द न पड़े, जहाँ न शोक हो न शोक की कोई सूचना और जहाँ कोई भी दुर्व्यवहार, पापाचार, अत्याचार, विकार इत्यादि दिखाई न देते हों। ऐसा लोक तो सतयुगी लोक ही था क्योंकि सतयुग ही में प्रकृति में भी सतोगुण प्रधान था, सभी मनुष्य भी दिव्य गुण सम्पन्न थे और धन-वैभव भी सभी प्राप्त थे।

'क्षीर सागर' के अर्थ के स्पष्टीकरण से भी यही सत्यता सिद्ध है

आपने देखा होगा कि भारत में ऐसे भी चित्र उपलब्ध हैं और ऐसा भी वर्णन तथा उल्लेख मिलता है जिनमें कि श्री नारायण (जो ही स्वयंवर से पहले श्रीकृष्ण थे), को क्षीर सागर में शेष नाग पर लेटा हुआ अंकित किया गया होता है। इस चित्र का भी अर्थ यही होता है कि श्रीकृष्ण सतयुग के आदि में हुए थे क्योंकि वास्तव में दूध को अतिपवित्र वस्तु माना गया है और दूध खुशहाली तथा सम्पन्नता का भी प्रतीक है और 'सागर' शब्द बहुताहत का भी वाचक है और पवित्रता तथा धन-धान्य की बहुताहत तो सतयुग ही में थी। आप जानते हैं कि जब कोई वस्तु अधिक होती है तो मुहावरे में कहा जाता है कि फलाँ वस्तु का तो यहाँ सागर है। अत: 'क्षीर सागर' या 'दूध का सागर' सम्पूर्ण पवित्रता तथा सुख-समृद्धि का बोधक है और साँप के ऊपर लेटना निर्भयता का प्रतीक है। अत: क्षीर सागर में शेष नाग पर निश्चिन्त भाव से लेटना, चित्रकार की भाषा में इस सत्यता का संकेतक है कि श्री लक्ष्मी और श्रीनारायण सतयुग के सुखकाल में हुए और उनका राज्य निर्विघ्न, निष्कण्टक और अति सुख-कारी था। उसमें कोई भी वैरी, कोई भी शत्रु या कोई हिंसक न था। स्पष्ट है कि इन सभी रहस्यों को जानते हुए भी यह कहना कि "श्री राधे और श्रीकृष्ण, जो स्वयंवर के बाद 'श्री लक्ष्मी' और 'श्री नारायण' कहलाये, द्वापर युग में हुए", भूल है और श्रीकृष्ण की ग्लानि करने के तुल्य है।

'वैकुण्ठनाथ' की उपाधि से भी सिद्ध है कि श्रीकृष्ण का जन्म सत्युग में हुआ

पुनश्च, श्रीकृष्ण के सभी भक्त, श्रीकृष्ण को 'वैकुण्ठ' की उपाधि से याद करते हैं और देखा जाय तो यह उपाधि भी उपर्युक्त रहस्य की पुष्टि करती है क्योंकि वास्तव में सतयुगी पावन एवं सम्पूर्ण सुखो सृष्टि ही देव-सृष्टि अथवा स्वर्ग एवं वैकुण्ठ है। स्वर्ग या वैकुण्ठ इस मनुष्य लोक

से ऊपर कहीं नहीं है बल्कि यह सतयुगी एवं त्रेता युगी सृष्टि का नाम है जो कि द्वापर युगी और कलि-युगी सृष्टि की भेंट में पवित्रता, सतोगुण, दिव्यगुण-सम्पन्नता तथा सुख-समृद्धि के दृष्टिकोण से उच्च है। अतः 'वैकुण्ठनाथ' का वास्तविक अर्थ है 'सत-युगी सुखमय सृष्टि का चक्रवर्ती राजा'। इसप्रकार, श्रीकृष्ण की इस उपाधि से भी संकेत मिलता है कि श्रीकृष्ण सतयुग के आरम्भ में हुए।

श्रीकृष्ण सोलह कला सम्पूर्ण निर्विकारी थे

श्रीकृष्ण के वास्तविक महात्म्य को जानने के लिए न केवल यह जानना ज़रूरी है कि वे वैकुण्ठ-नाथ थे और कि उनका जन्म सतयुगी पवित्र सृष्टि में और सतोप्रधान बेला में हुआ जबकि संसार में कोई भी म्लेच्छ या अपवित्रता न थी बल्कि यह जानना भी आवश्यक है कि वे सोलह कला सम्पूर्ण निर्विकारी थे। 'सोलह कला' का वास्तविक अर्थ समझने के लिए चन्द्रमा की कलाओं की ओर ध्यान दीजिये। चन्द्रमा पूर्णमासी तक प्रतिदिन जितना बढ़ता है, उसे 'कला' कहते हैं। पूर्णमासी के दिन वह सोलह कला सम्पूर्ण होता है। इस दृष्टि से उन मनुष्यात्माओं को **"सोलह कला सम्पन्न"** कहा जाता है जिन्होंने कि पूर्व जन्म में अर्थात् संगम समय प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान-प्रकाश की पर्ण धारणा की हो। अन्य मनुष्यात्माएँ जिन्होंने संगमयुग में ज्ञान की काफ़ी धारणा तो की होती है परन्तु फिर भी जो कलियुगी सृष्टि के महाविनाश तक सम्पूर्णता को प्राप्त नहीं हुई होतीं, उन्हें **"१४ कला संपन्न"** कहा जाता है। सोलह कला सम्पूर्णता वाली आत्माएँ सतयुग में साकार होती हैं क्योंकि उन्हें सतोप्रधान सृष्टि में प्रारब्ध भोगनी होती है। और चौदह कला वाली आत्मायें त्रेतायुग में साकार होती हैं। क्योंकि उन्हें सतोसामान्य सृष्टि में प्रारब्ध भोगनी होती है। अतः इस प्रकार 'कला' शब्द के रहस्य को समझने से भी यही निर्णय होता है कि श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग के आरम्भ में हुआ और कि उनके जीवन में कोई भी मनोविकार, कोई भी दूषित वृत्ति अथवा त्रुटि न थी।

श्रीकृष्ण, श्रीराम के पूर्व काल में हुए हैं

अभी-अभी हमने '१६ कला' और '१४ कला' का दिव्य अर्थ समझाया है और उससे पहले श्री कृष्ण अथवा श्रीनारायण का जन्म सतयुग में होने का जो रहस्योद्घाटन किया है, उससे स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण श्रीराम से भी पहले हुए थे। परन्तु आज तो भारत में लोग प्रायः यह मानते हैं कि श्रीराम त्रेतायुग में तथा श्रीकृष्ण उनके बाद द्वापर युग में हुए। किन्तु आज श्रीकृष्ण को सृष्टि के शुरू में पीपल के पत्ते पर दिखाई देने, उन्हीं का नाम स्वयंवर के पश्चात 'श्रीनारायण' होने तथा 'क्षीर सागर में शयन करने' और 'वैकुण्ठनाथ' की उपाधि से विभूषित होने आदि-आदि की जो व्याख्या हमने की है, उससे सत्य-प्रेमी लोग मानेंगे कि श्रीकृष्ण श्रीराम से भी पहले अर्थात् सतयुग के आरम्भ में हुए क्योंकि वह सोलह कला सम्पूर्ण थे जबकि श्रीराम १४ कला सम्पूर्ण थे और इस सृष्टि का नियम ही यह है कि यहाँ १६ कला सम्पूर्ण आत्मायें सतयुग में तथा १४ कला सम्पूर्ण आत्मायें त्रेतायुग में जन्म लेती हैं तथा उत्तम-उत्तर प्रारब्ध भोगती हैं। पुनश्च, सूर्यवंशी तथा चन्द्रवंश के भेद को जानने से भी इसी सत्यता की पुष्टि होती है।

श्रीकृष्ण सूर्यवंशी और श्रीराम चन्द्रवंशी थे

सूर्यवंश और चन्द्रवंश की उत्पत्ति का आज यदि कुछ इतिहास मिलता है तो आप देखेंगे कि उसे इतिहास की कोटि में गिनती नहीं किया जा सकता। इतिहासकार या तो लिखते हैं कि इन वंशों की शुरुआत का पता नहीं चलता और या वे लिखते हैं कि किंवदन्ती यह है कि इन वंशों की उत्पत्ति सूर्य और चन्द्रमा से हुई। परन्तु स्पष्ट है कि इस प्रकार से मानव-वंशों की उत्पत्ति मानना विवेक की सीमा को उलाँघ कर कल्पना के क्षेत्र में प्रवेश करना है और जाग्रत के सत्य से मुख मोड़कर स्वप्न की शरण लेना है। भला सूर्य और चन्द्र से मानवोत्पत्ति कैसे हो सकती है? वहाँ से मनुष्य टपककर यहाँ कैसे आ सकते हैं? ऐसा तो हो भी नहीं सकता कि सूर्य में मनुष्य रह सकें क्योंकि सूर्य तो मानो एक बहुत बड़ी भट्ठी है जहाँ हज़ारों-लाखों 'हाइड्रोजन बमों' का विस्फोट हर क्षण होता रहता है—ऐसा वैज्ञानिक लोग मानते हैं। तो प्रश्न उठता है कि सूर्यवंश और चन्द्रवंश

बेपेंदी का लोटा

ले०-ब्र० कु० चक्रधारी, शक्ति नगर, दिल्ली

एक सेठजी एक दिन नहा-धोकर नये उजले वस्त्र पहनकर अच्छे भले बैठे हुए थे और चमक रहे थे। उनके चेहरे से और उनकी बैठक से लगता था कि सेठजी मंगल कुशल हैं और मौज में हैं। इतने में हुआ क्या कि उनकी पत्नी भी नित्य कर्मों से फारिग होकर नहा-धोकर उस बैठक में से गुज़री। पता नहीं सेठानी जी को क्या हुआ, हथेली ठोड़ी पर रख ली, बड़ी अंगुली होंठो पर और चेहरा बनाकर बोली—हा ऽऽय ऽऽ आज आपको हुआ क्या है ? अभी कल रात को सोने से पहले तो आप चंगे-भले थे अब आपका चेहरा उतरा-उतरा क्यों लग रहा है ? पीला-पीला रंग और चढ़ी हुई आँखें ! चलो, बैठने की कोई ज़रूरत नहीं, थके-थके से लग रहे हो, चारपाई पर सोवो। जब मैं कहती हूँ तब आप मानते भी तो नहीं, जिस समय देखो काम में लगे रहते हो। अच्छा चलो, अब लेट जाओ।

यह सुनते-सुनते ही सेठजी का मुख फंक होने लगा। उनके चेहरे का रंग उड़ने लगा। उनका मन सोचने लगा कि अवश्य ही कुछ है जो अन्दर से रक्त को सुखाता जाता है। जभी तो सेठानी जी कह रही हैं कि चेहरा उतरा-उतरा है। बस, सेठानी जी की बात उन्हें ऐसे लग गई कि वे ऊँह-ऊँह करने लगे और हाथ लम्बा करके सेठानी जी को कहने लगे—"उठाओ तो"।

सेठानी जी ने सेठजी का हाथ पकड़ लिया और तो खुद भी मोटी-सी तो थीं ही, सेठ जी का हाथ पकड़कर उन्हें चारपाई की ओर लिवा लाने लगीं। और, सेठ जी, जो अभी ५ मिनट पहले ऐसे लग रहे थे कि जैसे माजून खाया हो, अब मुश्किल-से ही चलते हुए दिखाई देने लगे और चारपाई पर जाकर ऐसे पड़ गये जैसे ज़ख्मी घोड़ा मैदान में गिर पड़ता है।

सेठानी जी उनके सिरहाने बैठ गईं। सेठजी दबी आवाज में हा ऽऽय हा ऽऽय करने लगे और सेठानी जी कभी तो सेठजी को कहती कि आज आपकी यह हालत देखकर मुझे कुछ हुआ जाता है। भगवान खैर करे ! न जाने किस के श्राप से यह बुरी घड़ी मुझ पर आन पड़ी है और कभी कहती कि मालूम नहीं क्यों आपको ऐसा हो रहा है। हाय रे, कोई जल्दी से डॉक्टर को बुलाए।

फिर कुछ ही मिनट में उसने सेठजी के माथे पर हाथ रक्खा और उनकी कलाई को भी अपने हाथ में पकड़ा और फिर बोली—पता नहीं आज आपको क्या होता जा रहा है। आपके तो हाथ ही ठण्डे हुए जा रहे हैं। फिर बोली—"प्रभु जी, आज आप ही इन्हें बचाना।"

सेठजी जैसे-जैसे यह सुनते जाते, वैसे-वैसे उनकी हालत ही अजीब हो रही थी। उन्होंने छाती पर हाथ रख लिया, आँखें फेरने लगे और मुँह खुला छोड़कर लम्बे-लम्बे सांस लेने लगे जैसे दम तोड़ने से पहले कोई लेता है।

सेठानीजी भी यह देख बहुत घबराने लगी। उन्हें लगा कि सेठजी तो बस कुछ ही देर के मेहमान हैं। इतने में ही उनका लड़का भी वहाँ आ पहुँचा। उसको सारी बात बताते हुए सेठानीजी सेठजी से बोली कि देखो जी, न जाने अब भगवान को क्या मंजूर है, मैं तो कहती हूँ कि जो-कुछ किसी से आप का हिसाब-किताब रहा हुआ हो, जो लेना-देना हो

सब समझा दो, कौन जाने क्या होने वाला है !

सेठजी का पुत्र कुछ समझदार मालूम पड़ता था। उसने स्थिति को भाँपते हुए कहा—"हाँ-हाँ पिताजी, मैं भी यही समझता हूँ, आप ज़रा उठकर मुझे सब लेन-देन का हिसाब समझा दीजिए।"

सेठजी बहुत नाराज़ हो गए और बोले—"मेरा दम निकला जा रहा है और तुम्हें हिसाब-किताब सूझ रहा है।"

पुत्र ने उन्हें शान्त करते हुए कहा—"देखिये पिताजी, आपने कितनी मेहनत से धन कमाया है। हम नहीं चाहते कि उसे कोई यूँ ही लूट ले। इसलिए मैं तो चाहता हूँ आपका धन आपके ही सगों के पास रहे। थोड़ा हिम्मत कीजिए, उठिये, उठिये।" और, उसने सहारा देते हुए सेठजी को उठाकर बिठा दिया।

अब सेठजी का मन हिसाब-किताब की ओर चलने लगा। वे ऊँह-ऊँह करना भूलकर बीच-बीच में कह उठते—'अरे हाँ, मुझे तो फलाँ से भी इतना पैसा लेना है।' 'उस दिन वह आदमी भी मुझसे इतना कर्ज़ ले गया था'—इस प्रकार उनका मन अपने शरीर से हटकर दूसरी ओर चला गया। यह देखकर उनके पुत्र ने अन्दर ही अन्दर प्रसन्न होते हुए कहा—"पिताजी, वो सामने अल्मारी में भी तो आपकी कुछ रसीदें पड़ी हुई हैं। आप ज़रा उन्हें भी देख डालिए।"

सेठजी थोड़ा नाराज़ होते हुए बोले—"अरे, तुझे पता है कि तेरे आने से पहले मेरी क्या हालत थी। मैं बैठ भी नहीं पा रहा था और अब तू कहता है कि चलकर अल्मारी से रसीदें निकाल लूँ।"

पुत्र ने कहा—"पिताजी, मैं आपको वहाँ तक सहारा देकर ले चलता हूँ। आप कदम तो आगे बढ़ाइये।" और इतना कहकर बड़े प्रेम से उसने सेठजी को सहारा दिया और अल्मारी की ओर ले चला। सेठजी धीरे-धीरे कदम आगे बढ़ाते गये और रसीद बुक निकाल अपने लेन-देन के हिसाब की जाँच करने में व्यस्त हो गये। धीरे-धीरे उनमें हिम्मत-सी आती गई और चेहरे का रंग भी बदलता गया। जितने पैसे के वे मालिक थे, यह सोच-सोच उन्हें खुशी भी चढ़ती गई। यह देख फिर उनके पुत्र ने कहा—"बस, पिताजी, एक बार दुकान पर चलकर बहीखाते और देख लीजिए। फिर तो आप बिल्कुल ही ठीक हो जाएंगे। देखिये न, आपने अपने मन को दूसरी ओर लगाया तो कितना फर्क हो गया है। थोड़ा दुकान तक चलेंगे, फिर तो एकदम अच्छे हो जायेंगे। "आप को तो कुछ भी नहीं है, आप तो बिल्कुल ठीक हैं।"

सेठजी ने फिर अपनी ओर ध्यान दिया और उन्हें महसूस हुआ, सचमुच वे तो बिल्कुल ठीक हैं, उन्हें तो कुछ भी तकलीफ नहीं है। बस, फिर तो वे तेज़-तेज़ कदमों से दुकान की ओर बढ़ने लगे।

देखा बच्चो, सेठजी का क्या हाल था ! इसको कहते हैं—बेपेंदी का लौटा। जो अपनी बुद्धि का इस्तेमाल न करे, बस जिसने जो कहा, उधर का ही हो लिया। सेठानी ने कहा तुम बीमार हो तो सेठजी अपने को बहुत कमज़ोर महसूस करने लगे और जब उनके बेटे ने उन्हें हिम्मत बंधाई और कहा कि आप तो बिल्कुल ठीक हैं तो अपने को ताकतवर महसूस करने लगे। इसी प्रकार संसार में भी कुछ लोग ऐसे ही बेपेंदी के लोटे होते हैं। अभी-अभी कहेंगे कि आत्मा तो परमात्मा में लीन हो जाएगी और दूसरे ही क्षण फिर अपनी बात से एकदम बदल जाएंगे और कहेंगे कि आत्मा तो है नहीं। कोई इस बात को समझ जायेंगे कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है, फिर दूसरे ही पल कहेंगे कि कौन कहता है परमात्मा सर्वत्र व्यापक नहीं। सभी शास्त्रों में तो यही लिखा है। इस प्रकार वे बेपेंदे के लौटे की तरह होते हैं। फिर परमात्मा आकर उन्हें पेंदा देते हैं अर्थात ज्ञान की सत्यता को स्पष्ट करते हैं। □□

अलौकिक चश्मा

ब्र० कु० शकुन्तला द्वारा प्रेषित

मेरा नाम मोहिनी है। उम्र है करीब ग्यारह साल। आज मैं आपको एक आप बीती कहानी सुनाती हूँ।

मैं छठी कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे चश्मा लगाने का बहुत शौक है। और यह शौक भी कोई मामूली नहीं है। एक चश्मा १०-१५ दिन प्रयोग करने के बाद वह मुझे पुराना लगने लगता है और मन से उतर जाता है। इसलिए पापा महीने में दो चश्मे तो लाकर दे ही देते हैं। कई बार इस शौक को पूरा करने में पापा बेरुखी भी दिखाते हैं। परन्तु मेरी जिद्द के आगे उनकी बेरुखी फीकी पड़ जाती है।

एक दिन इसी चश्मे की बात को लेकर पापा भी पूरी जिद्द पकड़ गये। मैं भी मानने वाली नहीं थी। लेकिन पापा भी किसी तरह नया चश्मा लाकर देने को सहमत नहीं हो रहे थे। मैंने आखिरी दाँव मारा। रोना शुरू कर दिया। मुझे रोते देखकर पापा नया चश्मा लाकर देने का आश्वासन देकर ऑफिस चले गये!

रोते-रोते मुझे कब नींद आई यह पता ही नहीं चला। जब आँख खुली तो सिरहाने एक चश्मा रखा था। मैं बहुत हैरान थी। चश्मा बहुत ही सुन्दर था। चश्मे का फ्रेम सुनहरी था। ऐसा लगता था जैसे इम्पोर्टेड हो। मैंने भागकर मम्मी से पूछा, "मम्मी यह चश्मा पापा मेरे लिए लाए हैं?" मम्मी भी हैरान थी। "नहीं बेटा, अभी तेरे पापा ऑफिस से ही नहीं आए हैं।" अब मेरे आश्चर्य की कोई सीमा नहीं थी। तब यह चश्मा कौन लाकर रख गया भला? ओ! हो! अब याद आया सपना आया था। सपने में एक सफेद-सफेद बूढ़ा बाबा देखा था। उसने कहा था, "लो बेटा, यह चश्मा! तुम्हें चश्मा लगाने का बहुत शौक है ना? बहुत अच्छा चश्मा है ये।"

अब अच्छी तरह याद आया सोने से पहले रोते-रोते मैंने अपने भगवान् से प्रार्थना की थी, "हे भगवन्। पापा चश्मा लाकर नहीं देते हैं। आप भी तो मेरे माता-पिता हैं। आप मेरे लिए एक सुन्दर सा चश्मा भेज दोगे ना?" तो भगवान ने ही उस बूढ़े बाबा को वह चश्मा देकर भेजा था। अब मैं सोच में पड़ गई। कौन था वह सफेद-सफद बूढ़ा बाबा। सफेद कुछ लाल-लाल भी दीख रहा था। और चश्मा! मैंने आज तक जितने भी चश्मे प्रयोग किए थे उन सबसे निराला था। चलो छोड़ो, चश्मा लाने वाला कोई भी हो मुझे चश्मा मिल ही गया। मुझे आम खाने से मतलब है पेड़ गिनने से नहीं!

चश्मा लगाकर बड़ी शान से मैं बाहर निकली। पर यह क्या? जिस भी मानव आकृति पर मेरी नज़र पड़ती थी वह काला सितारा बन जाती थी। जी हाँ, चलता-फिरता काला सितारा! आकाश में दुधियां टिमटिमाते सितारे रात को देखे थे। पर ये दिन के उजाले में धरती पर कैसे काले सितारे दीख रहे थे! मैं आश्चर्य में थी। मैंने भागकर मम्मी पापा पर नजर डाली तो वे भी काले सितारे बन गये। हो न हो यह कोई जादू का चश्मा है। इसे पहनकर तो मम्मी-पापा बहन या भाई या सहेलियों की पहचान ही नहीं हो पाती। क्योंकि सब चलते-फिरते काले सितारे दीखते हैं।

लेकिन एक फायदा तो इस चश्मे से है। अभी परसों ही मास्टर जी ने हिन्दी का पाठ पढ़ाया था तो उसमें बताया था कि आज संसार में मतभेद बहुत हैं। ऊँच-नीच, काला-गोरा, अमीर-गरीब की खाई दिनों-दिन पाटती जा रही है। यदि सब लोग 'हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख ईसाई आपस में सब भाई-भाई' इस नारे पर अमल करें तो ये विश्वव्यापी समस्याएँ हल हो सकती हैं। पर मैं तो यह कहती हूँ कि यदि सबको एक-एक ऐसा चश्मा पहनने को दिया जाए तो फिर देखना ये समस्याऐं चुटकी भर में खत्म होती हैं। क्योंकि इतनी ये सब समस्याएँ दैहिक दृष्टि से उत्पन्न होती हैं। जब देह ही नहीं दिखाई देगी तो समस्याएँ कहाँ रहेंगी? मैं कल ही मास्टर जी से जाकर कहूँगी, "मास्टर जी, अभी २-३ दिन हुए आपने एक पाठ पढ़ाया था, जिसमें जिन विश्वव्यापी समस्याओं का जिक्र आया था उनके समाधान का बहुत ही सुन्दर और आसान

तरीका मुझे मिल गया है। लो यह चश्मा पहनकर देखो।"

पर मास्टर जी तो तुरन्त ऐसे चश्मे मंगवाएंगे और मैं कहाँ से लाकर दूँगी? सपने वाले उसी सफेद-सफेद बूढ़े बाबा से कहूँगी, "बाबा, कम से कम ऐसे चश्मे मेरे मम्मी-पापा और मेरी पूरी कक्षा के लिए तो लाकर ही दो। इनकी तो बहुत मांग हो गई है।"

दिन भर मैं बाहर गली-मुहल्ले में, बाजार में, सड़कों पर चश्मा लगाए घूमती रही। ऐसा लगता था जैसे धरती पर काले-काले सितारों की बाढ़ आ गई हो। मैं सोचती रही आखिर ये सितारे काले ही क्यों दिखाई देते हैं?

शाम हो गई। मैंने खाना खाया और सो गई। सपने में फिर वही सफेद-सफेद बूढ़ा बाबा आया। "बाबा, यह चश्मा पहनने के बाद मानव काले सितारे में क्यों बदल जाता है?" मेरा पहला प्रश्न यही था। बाबा ने जवाब दिया, "बेटी, जितने भी धरती पर प्राणी हैं उन सब में एक-एक ऐसी ही छोटी-छोटी सितारे जैसी आत्मा है। शुरू में (सतयुग में) जब ये धरती पर आई तो काली नहीं थी। तब ये आकाश में चमकने वाले सितारों से भी ज्यादा चमकदार और सुन्दर थी। पर धीरे-धीरे आत्मा पर विकारों की मैल चढ़ती गई और अब कलियुग के अन्त तक इसकी चमक बिल्कुल गायब हो गई और यह काली बन गई। इसे फिर से चमकीली बनाने के लिए सहज ज्ञान व सहज राजयोग की शिक्षा लो जो कि स्वयं परमात्मा आकर दे रहे हैं।"

"बाबा, ऐसे चश्मे कहाँ मिलते हैं? ये तो बहुत लाभदायक हैं। मेरी सहेलियों ने व मम्मी पापा ने ऐसे ही चश्मों की मांग की है।" तब बूढ़े बाबा ने जवाब दिया, "प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से ऐसे चश्मे मुफ्त मिलते हैं।" इतना कहकर वह बाबा अदृश्य हो गया। मेरी भी आँख खुल गई। मैं बहुत खुश थी। क्योंकि चश्मों की दुकान का पता चल गया था! और सबसे खुशी की बात तो यह थी कि कोई कीमत भी नहीं है मुफ्त मिलेंगे। सबको एक-एक चश्मा दिलवा दूँगी।

तो सुनी आपने मेरी आप बीती कहानी! अब मुझे रोज-रोज चश्मा बदलने का शौक नहीं है। एक विशेषता और भी है इस चश्मे में। सोते वक्त उतारने की जरूरत नहीं बल्कि पहनकर सोने से बड़ी अच्छी नींद आती है। यदि आपको जरूरत हो तो एक चश्मा आपको भी दिलवा दूँगी। चश्मे का नाम है देही-अभिमान ("Soul Conciousness") का चश्मा!! ○○

सुहाना बन्धन

ब्र० कु० रमेश, आबू

रक्षा बन्धन बड़ा सुहाना
लगता है सबको यह प्यारा।
इस बन्धन में सब बन्ध जाते,
बन्धते हैं, बहना भाई सब इसमें,
बहना कहती, पवित्र है यह बन्धन
जिससे तुम कभी न होंगे तंग!
पवित्रता का चढ़ा रहे तुम पर रंग।
पवित्रता की रक्षा तुम करना
आत्म रूप का तिलक लगाना।
कभी नहीं तुम करना भूल
रक्षा बन्धन का है यह फूल।
रक्षा करनी है तुम सबको
माया रावण से रहना दूर।
रक्षा बन्धन बड़ा सुहाना
लगता है सबको यह प्यारा।

○○

रोना नहीं तुम

ले०—ब्र० कु० सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

नाम न लेना रोने का, रोतों को हंसाने आये हो,
नहीं रूठना कभी, कि तुम, रूठों को मनाने आये हो,
जो रूठी तकदीर बदल दे, तुम ऐसी तदबीर हो।

कितने प्रेरणादायक हैं ये शब्द ! इन शब्दों के अर्थ स्वरूप में टिकने वाले का जीवन ही बदल जाता है। उसका दृष्टिकोण ही परिवर्तित हो जाता है। ये बोल वास्तव में हमें हमारे कर्त्तव्य की स्मृति दिलाते हैं कि आप इस जगत में क्या करने आये हो। औरों की आशा बंधाने वाला स्वयं निराश कैसे हो सकता है ? औरों को सुख देने वाला स्वयं दुःखी कैसे हो सकता है ? औरों को हँसाने वाला, उन्हें खुशी देने वाला स्वयं कैसे रो सकता है ? यह तो कर्त्तव्य परायणता नहीं परन्तु अपने कर्त्तव्य से विमुख होना हो जाएगा। युद्ध स्थल पर उपस्थित सैनिक यदि खुद ही युद्ध से घबरा जाए और सामने दुश्मन को देख उसके पसीने छूटने लगे तो वह अपने देशवासियों की रक्षा का कर्त्तव्य कैसे निभा सकेगा ? अगर डॉक्टर स्वयं ही किसी बीमारी से डरने लगे तो वह अन्य रोगियों को उस बीमारी से मुक्त करने का कर्त्तव्य कैसे पालन कर सकेगा ? यह विश्व भी तो एक वृहद युद्ध स्थल है और इस युद्ध स्थल में उपस्थित हम सिपाही छोटी-मोटी परिस्थितियों रूपी दुश्मनों से घबरा कर रोने लगे तो हम औरों को कसे हँसा सकेंगे ?

प्रश्न उठता है कि रोना आता ही क्यों है और रोना न आये, उसकी युक्ति क्या है ? कहते हैं कि कोई ऐसी तीखी बात कह देता है जो चुभ जाती है अथवा सहन नहीं होती, इसीलिए रोना आता है। कई बार ऐसी परिस्थितियां भी हमारे सामने आ जाती हैं जिनका हम मुकाबला अथवा सामना नहीं कर सकते, तब भी रोना आ जाता है। अतः ऐसे समय पर हम कुछेक बातों को ध्यान में रखें तो इस 'रोना' रूप बीमारी से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

१. कर्मगति

कहा जाता है कर्मों की गति बहुत गहन है। अथवा जैसा जो कर्म करता है, वह उसका वैसा ही फल अवश्य प्राप्त करता है। यह इस संसार का नियम है। अब मान लीजिए आपसे कोई गलत व्यवहार करता है अथवा आपको कोई ऐसा कटु शब्द, अपशब्द कह देता है और उसका व्यवहार सदा ही आपके प्रति ऐसा रहता है तो उस वक्त आपको यह सोचना चाहिए कि या तो यह मेरे ही किन्हीं पूर्व कर्मों का हिसाब-किताब है तो मुझे इस कर्ज़ को हंस कर ही चुकता करना चाहिए। और अगर ऐसा कोई कारण नहीं तो आज नहीं तो कल सत्यता अवश्य स्पष्ट होगी और उसके ही बुरे कर्म का फल उसके भी सामने आएगा, हम इसमें रोना क्यों शुरू कर दें ! ग़लती एक व्यक्ति करे और रोऊँ मैं, भला क्यों ? इस संसार में तो गुणों और अवगुणों की कशमकश है। अगर दूसरे व्यक्ति का यह दुर्गुण है कि वह आपसे ग़लत व्यवहार करता है तो आपका भी तो यह सद्गुण नहीं कि आप रोना शुरू कर देते हो। अंग्रेज़ी में कहावत है : Two wrongs do not make one right. अर्थात एक ने ग़लती की, इसलिए मैंने भी ग़लती की—यह कहना उचित नहीं। अतः भाव यह है कि हम हमेशा कर्म और फल के सिद्धान्त को सामने रखें तो रोना नहीं आएगा।

२. शान्ति आपका ख़ज़ाना है

हमें सदा यह याद रखना चाहिए कि 'शान्ति' तो मेरा ख़जाना (Treasure) है। इसे हम किसी भी हालत में अपने से छिनने नहीं देंगे। जैसे किसी व्यापारी से कोई व्यक्ति उसकी तिजोरी की चाबी

छीनना चाहे तो वह उसकी हर हालत में रक्षा करने की कोशिश करता है। जब हम उस स्थूल धन को अपने से गंवाना नहीं चाहते तो शान्ति रूपी धन को कैसे गंवा सकते हैं। और फिर शान्ति तो ऐसा धन है, ऐसा खज़ाना है जो स्वयं ईश्वर के पास भी है, इसीलिए तो उसे शान्ति का सागर कहा जाता है। यह तो ऐसी अमूल्य पूंजी है जिसको पाने के लिए लोग कितने जप, तप, हठ क्रियाएँ, संन्यास आदि कर लेते हैं और वह पूँजी मेरे पास है। माया दुश्मन किसी को निमित्त बनाकर मेरी इस पूंजी को छीनना चाहे तो मैं उसे सहज ही क्यों छोड़ दूँ ? अपने खज़ाने की रक्षा न कर पाना—यह तो मेरी ही कमज़ोरी है। रोना आना माना यह तो खज़ाने को लुटा देना है। अपने ही हाथों अपने ही खज़ाने को लुटा देना—यह तो अज्ञानता है।

३. भगवान आपका रक्षक है

कई बार ऐसी भी परिस्थिति होती है कि आपसे उम्र में बड़े अथवा पद में बड़े अथवा अन्य किसी तरह बड़े किसी व्यक्ति ने आपको ऐसी बात कह दी जो आपको चुभ गई और आपकी स्थिति ऐसी है कि न आप उसको कुछ कह सकते हैं न अपनी बात ही स्पष्ट कर सकते हैं और अन्दर ही अन्दर घुटते रहते हैं। धीरे-धीरे बात बढ़ती जाती है और समय ऐसा आता है कि आँखों से अश्रु धारा बह निकलती है। ऐसे समय पर हमें यह याद रखना चाहिए कि भगवान् हमारा रक्षक है। कहा जाता है भगवान् के घर में देर है, अन्धेर नहीं। हमें यह निश्चय होना चाहिए कि कोई मेरी सुने या न सुने अथवा अन्य किसी को यह बात मैं कह पाऊँ या नहीं, भगवान् यानि शिव बाबा को तो मैं अपनी बात कह ही सकती हूँ, वह तो मेरी अवश्य सुनेगा। किसी ने कहा भी है कि—

"जिसका न कोई संगी साथी ईश्वर है रखवाला
जो निर्धन है जो निर्बल है वो है प्रभु का प्यारा"

समय अवश्य लग जाता है परन्तु सत्यता एक दिन अवश्य स्पष्ट होती है। या तो वह व्यक्ति स्वयं ही समझ जाएगा और या आप भी समय आने पर उसको स्पष्ट कर सकते हैं।

४. महान बनना

इतिहास साक्षी है कि जिस भी क्षेत्र में जो व्यक्ति महान हुए हैं जैसे नेपोलियन, महात्मा गाँधी, प्रजापिता ब्रह्मा आदि-आदि, उन्होंने मुश्किलों का सामना किया। वे ऐसी-ऐसी परिस्थितियों, जिनमें मनुष्य फूट पड़ें, में भी रोए नहीं परन्तु उनसे जूझ पड़े। डट कर मुकाबला करने वाले ही महान होते हैं। जो रोते हैं वे तो बच्चे हैं क्योंकि वे निर्बल हैं, आधारित हैं। और अगर हम इतने बड़े होकर भी रोते हैं तो यही कहना होगा कि हम केवल शारीरिक रीति से अथवा उम्र में बड़े हो गये हैं परन्तु मानसिक व आध्यात्मिक रीति से अभी हम बच्चे ही हैं। हमें तो बड़ा होना है, महान बनना है और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी डटा रहने वाला ही महान बनना है। राजा रॉबर्ट ब्रूस और मकड़ी की भी कहानी प्रसिद्ध है कि मकड़ी कितनी बार गिरती थी परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी और आखिर वह अपनी मंजिल पर पहुंच गई और यह देखकर राजा में भी हिम्मत आ गई और उसने फिर से युद्ध में तैनात हो दुश्मनों से विजय प्राप्त की। तो हम भी हिम्मत क्यो हारें। चाहे कितनी भी विकट परिस्थिति हो हम भी यह दृढ़ संकल्प करें कि हम भी नहीं रोयेंगे। यह दृढ़ता ही मानसिक बल को बढ़ावा देती हैं और हम विजयी हो सकेंगे।

५. हल न कि हलचल

मान लीजिए आपसे कोई भूल हो जाती है अथवा नुकसान हो जाता है और उस वक्त आपको कोई डाँट देता है और ऐसा डाँटता है कि आपकी आँखों से आँसू निकल आते हैं। वास्तव में उस परिस्थिति में हमें हलचल में आने की बजाय उसका हल सोचना चाहिए। हलचल में आ जाने से सारा वातावरण ही बिगड़ जाता है और तनावपूर्ण हो जाता है। अतः वातावरण को खुशहाल रखने के लिए हमारा कर्त्तव्य है कि उस परिस्थिति का हम हल सोचें। उपरोक्त परिस्थिति में जबकि

हमसे ही भूल हुई है तो हमें अपनी भूल का अहसास करते भूल की क्षमा माँग लेनी चाहिए और कहना चाहिए कि आगे के लिए हम ध्यान देंगे ताकि यह फिर से न हो। ऐसा कह देने से दूसरा व्यक्ति भी शान्त हो जाता है और समझता है कि चलो इसने भूल को मान तो लिया। अब और यह क्या करे। इस प्रकार वातावरण में हलचल नहीं होती और सहज ही परिस्थिति टल जाती है। परिस्थिति आने पर रो लेना कोई उसका हल नहीं है, यह तो उसे और ही उलझाना है।

यदि आपकी भूल नहीं, भूल दूसरे की है तो भी आप पर इल्ज़ाम आता है तो हमें धीरज रखना चाहिए और निश्चय रखना चाहिए कि सच की नैया डोलती है परन्तु डूबती नहीं। आखिर तो एक दिन सत्य स्पष्ट हो ही जाएगा।

इस प्रकार इन सब बातों की स्मृति तथा उनका निश्चय 'रोना' रूपी अवगुण पर विजय प्राप्त करा सकता है। आँसू तो मोती है, इन्हें व्यर्थ न गँवाओ। अगर इन्हें बहाना भी है तो केवल प्रभु के प्रेम में।

○○

योगी करता नजर निहाल

ले० ब्र० कु० आनन्द जालन्धर

मान शान महिमा से दूर
निर्मल हृदय आँखों में नूर।
सादा जीवन सादगी शृंगार
योगी पहने विजय का हार॥

भीतर बाहर एक समान
सेवा निमित्त भाव से काम।
संस्कार स्वभाव में आता परिवर्तन
योगी का नित होता सवंर्द्धन॥

स्वप्न संकल्प वाणी साकार
इनमें कभी नहीं विकार।
मार्यादित संयत और नियमी
योगी सदा स्वचिंतन का प्रेमी॥

शत्रु को भी मित्र बनाये
तत्त्वों तक को पावन कर जाये।
हल्का और विकर्म विनाशी
योगी नहीं बहु अभिलाषी॥

बनावट, सजावट, दिखावट नहीं
सिखावट, विकलाहट मिलावट नहीं।
मुर्झाहट कुमलाहट रुकावट नहीं
योगी हृदय में घबराहट नहीं॥

झुकाव टिकाव लगाव नहीं
अटकाव दवाब तनाव नहीं।
दया दृष्टि हृदय रहम दयाल
योगी करता नजर निहाल॥

यह राखी है सुख का सार

ब्र० कु० मोहन, अमृतसर

शिव बाबा से भरकर प्यार
बहना लाई है दो तार
भईया करो इसको स्वीकार
यह राखी है सुख का सार
सब बन्धनों से करे जो न्यारा
रक्षा बन्धन यह है प्यारा
पवित्रता का लेके सहारा
जग को दिखाना स्वर्ग किनारा
इस पावन बन्धन में बन्धकर
ले चलना सबको उस पार

यह राखी है···

रक्षा बन्धन लाई यह बहना
परमपिता का यही है कहना
कमल सम इस जग में रहना
ज्ञान योग का यही है गहना
बांध ले भईया कभी खुले ना
राखी है जीवन का शृंगार

यह राखी है···

योगी का है अंकुश मन पर
ज्यों सफल महावत होता।
विचारों के यातायात में
पथ भ्रष्ट नहीं वो होता॥

श्रीकृष्ण ही नारायण थे— (पृष्ठ १२ का शेष)
का वास्तविक परिचय क्या है ?

यह तो सभी जानते हैं कि सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा के प्रकाश से अधिक होता है। अब मालूम रहे कि आध्यात्मिक शब्दावली में जैसे ज्ञान को 'प्रकाश' कहा जाता है, वैसे ही अधिक ज्ञानवान को 'सूर्यवंशी' और उससे कम ज्ञानवान को 'चन्द्रवंशी' कहा जाता है। अतः कलियुग के अन्त और सतयुग के आरम्भ के संगम समय परमपिता परमात्मा 'शिव' ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो ईश्वरीय ज्ञान दिया और सहज राजयोग सिखाया, उससे दो वंश स्थापित हुए। जिन्होंने ज्ञान की सम्पूर्ण धारणा की, वे सतोगुण प्रधान गुण-कर्म-स्वभाव वाले हुए और जिन्होंने कुछ कम धारणा की, वे सतोसामान्य गुण-कर्म-स्वभाव वाले हुए। पहले वर्ग अथवा वर्ण को 'सूर्यवंशी' और दूसरे वर्ग वालों को 'चन्द्रवंशी' कहा गया। इससे स्पष्ट है कि 'सूर्यवंशी' तो सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण 'प्रकाशवान्' सम्पूर्ण निर्विकारी तथा अहिंसा-प्रधान वृत्ति वाले मनुष्य थे (जिन्हें कि दिव्यगुणों से युक्त होने के कारण 'देवता' भी कहा जा सकता है) और वे सतयुग में हुए और चन्द्रवंशी पवित्र मनुष्य त्रेतायुग में हुए।

श्रीकृष्ण पूर्व जन्म में प्रजापिता ब्रह्मा थे

हम पहले बता आये हैं कि कलियुग के अन्त और सतयुग के आरम्भ में परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर गीता-ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दी थी और कि उसको पूर्णतया धारण करने वाले नर-नारियों ने ही सोलह कला सम्पूर्ण सूर्यवंशी देवी या देवता के रूप में पद प्राप्त किया। अतः इससे स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण ने भी १६ कला सम्पूर्ण, सूर्यवंशी देवता पद पूर्व जन्म में उसी ईश्वरीय ज्ञान और योग द्वारा प्राप्त किया था। अब त्रिकालदर्शी परमपिता परमात्मा शिव की कृपा-प्रसाद के रूप में हमें उनसे ज्ञात हुआ है कि प्रजापिता ब्रह्मा ने ही उसी ज्ञान और योग की धारणा से तथा उस द्वारा अनेकानेक नर-नारियों को लाभान्वित करने के फलस्वस्वरूप श्रीकृष्ण पद प्राप्त किया और सरस्वतीजी ने श्री लक्ष्मी पद अथवा श्रीनारायण पद प्राप्त किया। अतः कहावत भी प्रसिद्ध है कि "ज्ञान द्वारा नर को श्री नारायण और नारी को श्रीलक्ष्मी पद प्राप्त होता है।" परन्तु आज लोगों को यह मालूम नहीं है कि श्रीकृष्ण ने वह देव पद कैसे प्राप्त किया था।

विचार करने पर आप मानेंगे कि किसी को राज्य-भाग्य अथवा धन-धान्य या तो दान-पुण्य करने से या यज्ञ-योग करने से और या युद्ध द्वारा शत्रु राजा को जीतने से ही प्राप्त होते हैं। परन्तु श्रीकृष्ण को जो राज्य-भाग्य अथवा धन-धान्य प्राप्त था, वह कोई साधारण, विनाशी या सीमावाला न था बल्कि अलौकिक, अखुट, उत्तम, अविनाशी और असीम, अखण्ड तथा सम्पूर्ण और पवित्र था, तभी तो आज तक दूसरे राजा-महाराजा भी श्रीकृष्ण अथवा श्री नारायण की भक्ति-पूजा करते हैं। अतः प्रश्न उठता है कि श्रीकृष्ण ने कौनसा यज्ञ, कौनसा दान-पुण्य अथवा कौनसा युद्ध किया था जिसके फलस्वरूप उनको ऐसा सर्वोत्तम दो-ताजधारी पूज्य देव पद (Double-Crowned Deity Status) प्राप्त हुआ कि जिसका आज तक गायन-वन्दन है ? परमपिता परमात्मा शिव ने अब इसके विषय में समझाया है कि श्रीकृष्ण ने प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में ईश्वरीय ज्ञान धारण करके, 'ज्ञान यज्ञ' रचा था। उन्होंने अपना तन, मन और धन सम्पूर्ण रीति से उस यज्ञार्थ 'ईश्वरार्पण' कर दिया था। उन्होंने अपना जीवन मनुष्यमात्र को ज्ञान-दान देने में लगा दिया था और जन-मन को परमपिता परमात्मा से योग-युक्त करने तथा उन्हें सदाचारी बनाने में व्यतीत किया था। उन्होंने काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार, जिन्हीं का उस समय समस्त भू-मण्डल पर अखण्ड राज्य था, को ज्ञान-तलवार तथा योग के कवच के प्रयोग से जीता था। अतः इसी के फलस्वरूप उन्होंने भविष्य में सृष्टि के पवित्र हो जाने पर, सतयुग के आरम्भ में श्रीकृष्ण के रूप में अटल, अखण्ड और अति सुखकारी तथा दो ताजधारी स्वर्गिक स्वराज्य तथा पूज्य देव पद प्राप्त किया था।

OO

रूहानी डॉक्टर

ब्र० कु० रमेश, गामदेवी, बंबई

हम बच्चों को प्यारे शिव बाबा ने अनेक प्रकार के टाइटिल (Title) दिये हैं जैसे कि परमात्मा का पैगाम देने वाले पैगंबर, सबके भाग्य को जगाने वाले मास्टर भाग्यविधाता, वरदाता आदि-आदि। उसी तरह से एक और टाइटिल परमात्मा का हम बच्चों को दिया हुआ है—रूहानी डॉक्टर तथा रूहानी सर्जन। जब यह शब्द हम सुनते हैं तब यह प्रश्न मन में उठता है कि हम रूहानी डॉक्टर या सर्जन कैसे बने ? कैसे हम इस ईश्वरीय ज्ञान-योग के आधार पर रूहानी डॉक्टर बन अन्य आत्माओं की सेवा करें—उन्होंमें जो विकार आदि की बीमारी है वह कैसे निकालें और कैसे भाव-स्वभाव, ईर्ष्या-द्वेष आदि से उन्हें बचावें।

पश्चिम की दुनिया में अनेक प्रकार के वैज्ञानिक हैं। उसमें भी मनोवैज्ञानिक डॉक्टरों ने तो अब आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर अनेक प्रकार की परंपरागत या अन्य प्रकार की कड़ी बीमारियों को दूर करने का प्रयोग शुरू किया है। ज़रा हम उस पर विचार करेंगे।

पूर्वजन्म को ईसाई आदि धर्मवाले नहीं मानते। परंतु आज के वैज्ञानिक मानते हैं कि पूर्वजन्म यह वैश्विक सिद्धांत (Universal Principle) है। नीश्ते, वॉल्टर, इमरसन आदि तत्वज्ञानी पूर्वजन्म को मानते हैं। बेन्जामिन फ्रेंक्लीन जैसे तत्वज्ञानी तथा राजनीतिज्ञ ने तो साफ कहा है कि आत्मा अनेक नाम-रूप में सदा ही इस विश्व-मंच (Stage) पर अपना पार्ट बजाती है। अब पूर्वजन्म के इस सिद्धांत को ख्याल में रखते हुए मनोवैज्ञानिकों ने पूर्व-जन्म के आधार पर उपचार-विधि (Past-lifetherapy) अपनाई है और इस प्रकार की उपचार-विधि करने वाले डॉक्टरों की एक असोसियेशन (Association) है जिसकी प्रमुख बहन हेझल डेनींग अपनी मद्रास कान्फ्रेंस में खास यू० एस० ए० (U.S.A) से आई थी और अपना पेपर भी पेश किया था। उन्होंने बताया कि वे तत्वज्ञान पढ़ती थी तथा थोड़ा हिप्नाटिज़म जानती थी। उनके एक रोगी जिसने आत्मघात करने का प्रयत्न किया था उनके साथ जब बात की और कहा कि आपको जो मानसिक अशांति है उसका कारण और निवारण आपके मन के अंदर छुपे हुए संस्कारों में जरूर है। आप हिप्नाटिज़म की उस अनुभूति में अपने पूर्वजन्म के इतिहास को जानने का प्रयत्न करो। उसी उत्तेजना में उस रोगी बहन ने बाद में बताया कि पूर्वजन्म में एक गुलाम कन्या थी। सरकार के सैनिकों ने आकर हमारे खेतों को आग लगाई और हम सबको पकड़ कर ले गये। मैं थोड़ी जवान (young) तथा सुंदर थी उसी कारण मुझे इनका शारीरिक कष्ट नहीं उठाना पड़ा और ऐसा कहते-कहते वह वर्तमान जीवन का पूर्व-जन्म के साथ क्या संबंध है वह कहने लगी। जब मालूम पड़ा कि वर्तमान मानसिक अशांति भूतकाल के उन कर्मों के आधार पर है तब इस कारण-मीमांसा को जानकर उसकी अशांति दूर हो गई।

इस उपचार-विधि में रोगी अपने भूतकाल को तथा पूर्व-जन्म को चित्र-कथा के रूप में या कहानी के रूप में पढ़ सकता है या फिल्म की तरह देख सकता है और बाद में जब इस विधि को जानने वाले डाक्टर के साथ वह रोगी उन्हीं बातों पर चर्चा करता है तब रोगी में वृत्ति-परिवर्तन आता है और तनाव के कारण उत्पन्न रोग चला जाता है या तो उसे बहुत अच्छी राहत मिलती है।

बहुधा ये चिकित्सा करने वाले डॉक्टर शुरू में पूर्वजन्म को नहीं मानते परन्तु जब उनके रोगियों के पूर्वजन्म के वृतांतों को जानने के कारण उनके अनेक असाध्य रोगों के चिह्नों को गायब होते हुए देखकर वे यह चिकित्सा पद्धति अपनाते हैं और पूर्वजन्म को मानने लगते हैं। डॉक्टर हेझल के मत अनुसार पूर्वजन्म चिकित्सा पद्धति या उपचार विधि द्वारा रोगी अपने आत्मा के, आध्यात्मिक रूप से, अविनाशी अस्तित्व को मानता है। जीवन इस वर्तमान शारीरिक जन्म से भी पहले था तथा उसी जीवन के अनुभव, संकार रूप में उसमें मौजूद थे, इस प्रकार की अपने भूतकाल के साथ वर्तमान में जब संबंध (Link establish) मालूम पड़ता है

तब वर्तमान को भी, वह रोगी अच्छी रीति से जानता है। रोगी अपने संस्कारों तथा भावनाओं को समझता है तथा वर्तमान में क्या चाहता है और वह नहीं होता उसके कारण जानने से उन कारणों को दूर करके वर्तमान जीवन ज्यादा सुखी बनाने का पुरुषार्थ करता है। सहानुभूति तथा स्व की सच्ची पहचान के कारण रोगी अब भविष्य को, भाग्य को भी अच्छी रीति से जान लेता है।

पूर्वजन्म के ज्ञान के आधार पर चिकित्सा विधि से इन मनोवैज्ञानिकों ने आध्यात्मिक क्षेत्र के कुछ एक सिद्धांतों को भी सिद्ध किया है। अर्थात भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान आपस में एक दूसरे के मददगार बने हैं। अनेक आध्यात्मिक सिद्धांतों को इस चिकित्सा पद्धति से समर्थन मिला है उनमें से थोड़े इस प्रकार हैं—

१. पूर्व जन्म यह वैश्विक सिद्धांत है।

२. पूर्व जन्म के संस्कार, ज्ञान आदि आत्मा में सदा रहता है।

३. स्मृति-विस्मृति का खेल जन्म-मृत्यु के कारण होता है।

४. पिछले जन्म के मृत्यु समय के संस्कार बहुत प्रबल रूप में इस जन्म में उस आत्मा के सामने आते हैं और उसी की फीलिंग सबसे ज्यादा रहती है।

५. सभी आत्मायें अपने कर्मों के लिये जिम्मेवार हैं और इसी कारण किसी अन्य आत्मा, शिक्षक या परमात्मा पर दोष नहीं लगा सकते।

६. कर्म का सिद्धांत—कारण और निवारण को जानने में बहुत ही मददगार है। कर्मों का सिद्धांत सबके लिये है, कोई ये दैवी कानून से ऊपर नहीं हैं।

७. जीवन का लक्ष्य ही है आध्यात्मिक उन्नति।

८. हरेक प्रकार के दुःख कोई न कोई भूतकाल की बातों से संबंधित है। इसलिये दुःख एक प्रकार की चेतावनी (Warning) है।

जैसे ये पूर्व-जन्म के वृत्तान्तों को जानकर चिकित्सा करने वाले मनोवैज्ञानिक डॉक्टर हैं वैसे ही एक दूसरा विभाग है मनोवैज्ञानिकों का। जिसका नाम है Trans Personal Psychologists अर्थात पांच कर्मेंद्रियों से अलग अर्थात अतीन्द्रिय अनुभवों के आधार पर चिकित्सा करने वाले मनोवैज्ञानिक। अतीन्द्रिय अनुभव पहले तो साक्षात्कार आदि बातों के आधार पर ही होते थे। परंतु जब से डॉक्टर आल्फ्रैड होफमेन (Dr Alfred Hoffman) ने LSD नाम के द्रव्य का संशोधन किया है तबसे उसी क्षेत्र के अंदर अनेक अन्य ऐसे (Similar) द्रव्यों के प्रयोग के आधार पर अनेक प्रकार के अतीन्द्रिय अनुभव व्यक्ति कर सकता है। एक प्रकार की विशेष तन्मय स्थिति के कारण मन में एक परिस्थिति का निर्माण होता है। उसे समाज आदि बातें बंधन लगती हैं और वह समाज के बंधनों को तोड़ने के लिये तैयार हो जाता है। परिणाम रूप एक विशेष वर्ग का निर्माण थोड़े समय के लिये हुआ जिसे लोग हिप्पी के नाम से जानते हैं। हिप्पियों में भी अनेक प्रकार हैं। हम यहाँ उसकी चर्चा नहीं करेंगे परन्तु एक बात का जिसका इस चिकित्सा विधि के साथ संबंध है उसी की चर्चा करगे।

इस LSD द्रव्य के प्रयोग के कारण जो अतीन्द्रिय अनुभव हुए उनका विशेष रूप से अभ्यास करके, इस अभ्यास के आधार पर चिकित्सा पद्धति थोड़े मनोवैज्ञानिकों से शुरू की। ऐसे अनुभवों के अंदर कई अनुभव पूर्व-जन्म के भी थे तो कोई अनुभव अन्य बातों के भी थे। एक अमेरिकन अति मंदबुद्धि कन्या जब LSD द्रव्य लेती थी तो उस अवस्था में हाथ के इशारों द्वारा उसने चित्रांकन करने की इच्छा प्रगट की। उसी अतीन्द्रिय तथा पूर्वजन्म की परानुभूति की अवस्था में उसने ३६ चित्र पेंट किये। कला के विवेचनकारों (Art critics) ने जब ये चित्र देखे तब कहा कि ये चित्र कोई सिद्ध हस्त कलाकार के हैं। LSD द्रव्य रहित की स्थिति में वह कन्या एक निर्बुद्ध सामान्य अक्षरज्ञान से भी रहित थी। यह द्रव्य मन को एक प्रकार की विशेष उत्तेजना देता है या विशेष अनुभूति देता है। ये अनुभव, स्थिति तथा अन्य संबंधित बातों के आधार पर मनोवैज्ञानिकों ने अनेक सिद्धांत तैयार किये हैं। उनका भी एक असोसियेशन बना है और समय प्रति समय कान्फ्रेंस आदि का आयोजन करके ये ट्रांस के अनुभवों के आधार पर विशेष चर्चा करते हैं। LSD द्रव्य तमोप्रधान है और उसी कारण

अनुभव में व्यक्ति को भय, मृत्यु, हत्या, लाचारी, दु:ख आदि के अनुभव विशेष होते हैं और उसी के आधार पर उनका दबाव या तनाव को ये मनोवैज्ञानिक दूर करते हैं। उन्होंने भी कई आध्यात्मिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक ढंग से समर्थन किया है जैसे कि पूर्वजन्म, कर्मों का, दुखनिवृत्ति का सिद्धांत इत्यादि।

मानसिक रोग ये मन के रोग हैं। अब हम जानते हैं कि मन-बुद्धि और संस्कार सहित आत्मा है। उसी कारण रोग-रूहानी रोग या बीमारी भी है। ये मनोवैज्ञानिक डाक्टर मानसिक बीमारी को दूर करते हैं या दूर करने का जो प्रयत्न करते हैं उसी तरह हम रूहानी डाक्टर्स को भी अब विशेष प्रकार से ईश्वरीय सेवा करनी चाहिये। प्रभु के पैगाम को देने वाले बनकर, हम सब पैगंबर का पार्ट तो अच्छी रीति से करते हैं किन्तु रूहानी डाक्टर बन रूहानी दवा और दुआ के द्वारा लोगों के मानसिक तथा भौतिक रोगों को दूर करने का प्रयत्न यदि हम करें तो हमारे पुरुषार्थ के आधार पर कई आत्मायें रूहानी शक्ति को पाकर अपने अनेक जन्मों की बीमारी को दूर कर सकती हैं तथा हम ईश्वरीय ज्ञान के कई सिद्धांतो को सिद्ध कर सकेंगे जिससे लोगों की श्रद्धा हमारे ज्ञान में तथा हमारे कर्तव्य में अच्छी रीति हो जाए तो स्थापना का कर्त्तव्य अच्छी तरह से अर्थात सुचारु रूप से समाप्त हो सके। □□

सचित्र सेवा समाचार

मनीनगर सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन वटवा के सामाजिक कार्यकर्ता भ्राता अंबाप्रसाद जी कर रहे हैं। साथ व्यापारी कालिदास भाई, ब्र० कु० उषा व ब्र० कु० पूनम दिखाई दे रही हैं।

बावड़िया (देवास) में हुए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कौमी एकता के अध्यक्ष व पत्रकार भ्राता मीर शब्बीर अली जी दिखाई दे रहे हैं, साथ में विजय गुप्ते, व ब्र० कु० मंजू जी खड़े हैं।

मिरयलगुडा में भ्राता त्रिडेन्डी श्रीमान नारायण रामानुज डि० गुन्टूर व ब्र० कु० शकुन्तला चित्र में ज्ञान के एक बिन्दु पर ज्ञान चर्चा करते हुए दिखाई दे रही हैं।

परमपिता परमात्मा ज्योति-बिन्दु शिव वरदाता हैं। वे सद्बुद्धि (ईश्वरीय ज्ञान) और सहज योग के महावरदानों द्वारा पवित्रता, शान्ति, गुणवत्ता, और आनन्द रूपी उत्तम वरदान देते हैं। अतः मनुष्यात्मा को चाहिये कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज योग के ईश्वरीय वरदान ले ताकि वह दूसरे वरदानों की भी अधिकारी बन सके।

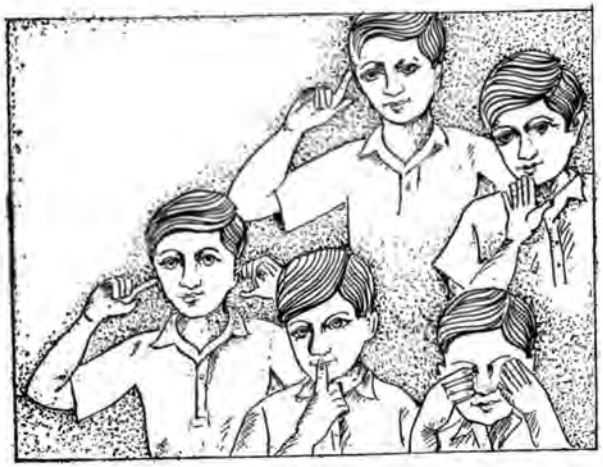

रक्षाबन्धन हमें सन्देश देता है कि 'आत्मा की पाँच बुराइयों से रक्षा करो।' अतः बुरा मत सोचो, बुरा मत करो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो और बुरा मत देखो।

आत्मा रूपी कन्या अथवा पुत्र के मन से सहज-प्रेम के भाव में ये शब्द गीत बनकर विनिसृत होते हैं—तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो। परमात्मा शिव जो स्त्री और पुरुष, दोनों शारीरिक रूपों से ऊपर, ज्योति-बिन्दु हैं, उन्हीं से आत्मा के सभी सम्बन्ध हैं।

पवित्रता से ही बन्धनों से स्वतंत्रता

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

अचला अपनी माँ (भाग्यवती) और बाप (चन्द्रपाल) के साथ बैठकर चर्चा कर रही है।

अचला—माँ, जब इस सृष्टि पर स्वर्ग था तो हर मानव बन्धनमुक्त था और आज देखो इस दुनिया की क्या हालत हो चुकी है जो चारों ओर नज़र दौड़ाते हैं तो बन्धन ही बन्धन दिखाई देते हैं। इन बन्धनों ने जैसे कि सभी को अपना गुलाम बना दिया है।

भाग्यवती—ज़रूर बेटी, ऐसा कोई न होगा जो बन्धनों से जकड़ा हुआ न हो। हरेक को चाहना होती है स्वतन्त्र जीवन जीने की लेकिन किसी न किसी विकार-वश मनुष्य बन्धन में बन्ध ही जाता है। वह अज्ञानता के कारण बन्धन को सुखदाई समझता है। लेकिन जब उसे पता चलता है कि मैं बन्धन वश हूँ तो घबराकर चिल्लाने लगता है।

अचला—माँ, मनुष्यों की हालत बिल्कुल पिंजरे के पंछी समान हो चुकी है। जैसे पंछी किसी कमजोरी से या लालच से अपनी स्वतन्त्रता खोकर पिंजरे में फँस जाता है। बाद में जब किसी उड़ते पंछी को देखता है तो पश्चाताप के आंसू बहाता है। किसी ने ठीक ही कहा है—"पिंजरे के पंछी रे, तेरा दर्द न जाने कोई" सचमुच माँ, उस पिंजरे के पंछी को जो दर्द होता है उसे उसके बजाय और कोई नहीं जान सकता।

भाग्यवती—बात तो बिल्कुल ठीक है अचला, उस बन्धन वश पंछी को चाहे सोने के पिंजरे में रखो, चाहे जो खिलाओ पिलाओ, फिर भी वह सदा उदास ही नज़र आता है।

अचला—माँ, स्वतंत्रता से बढ़कर इस दुनिया में और कोई बात नहीं। हरेक अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना चाहता है। लेकिन माया अज्ञान की पट्टी आँखों पर बान्धकर किसी न किसी बन्धन के खड्डे में गिराकर गुलाम बना देती है। और ऐसे गुलाम को सदा माया को सलाम करना ही पड़ता है।

भाग्यवती—बेटी, ये बन्धन रूपी जंजीर सभी को आकर्षित करती हैं। देखो, ये तन के रोगों का बन्धन भी कितना कड़ा और बड़ा बन्धन है। इस बन्धन ने तो मानव को खोखला बना दिया है। न जाने कितने रोगों ने इस संसार पर अपना घेराव तथा फैलाव किया है।

अचला—माँ, इस तन के रोगों का आखिर कारण क्या है ?

भाग्यवती—अचला, **तन के रोग होते ही हैं भोग से।** किसी न किसी विकार के वशीभूत हम उल्टे सुल्टे कर्म करते हैं, जिससे शारीरिक शक्तियों का क्षय होता है और तन अनेक रोगों का घर बन जाता है।

अचला—क्या इतनी छोटी-सी बात भी लोगों को ज्ञात नहीं है ?

भाग्यवती—बेटी, पता तो सभी को है लेकिन इस कलियुग में आत्मा इतनी कमज़ोर बन चुकी है जो बुद्धि यथार्थ निर्णय भी नहीं कर सकती है। परिणामतः नियंत्रण शक्ति के अभाव से कमज़ोर तथा विकृत मन में जो उल्टे संकल्प चलते हैं, वे उल्टे कर्म कराते हैं। और यह विकर्मों का फल हमें तन के रोगों के भोग द्वारा चुकाना पड़ता है। इसी तरह मनुष्यों को अपने मन को यथार्थ **राह पर चलाना नहीं आता, तब ही उन्हें चिल्लाना पड़ता है।**

अचला—इस तन के रोगों के बन्धन के साथ और भी तो कई बन्धन है माँ।

चन्द्रपाल—(गंभीरता से) अचला लगता है आज तुम्हारी बुद्धि की लाइन क्लीयर है, बड़े गहरे तथा गंभीर प्रश्न पूछ रही हो, क्या बात है ?

अचला—नहीं पिताजी, ऐसी कोई बात नहीं है। लेकिन जब मैं स्कूल जाती हूँ तो अनेक दुखी अशान्त

तथा उदास चेहरे नज़र आते हैं तो मुझे भी वैराग्य आने लगता है। तो मैंने सोचा वैसे भी आज छुट्टी का दिन है तो विचार विमर्श करें अनुभवी मां-बाप के साथ।

भाग्यवती क्यों नहीं बेटी, जरूर करनी चाहिए ऐसी बातें, इससे तो और भी बुद्धि का विकास होता है।

अचला—माँ, ये देह तथा देह के सम्बन्धी और देह के धर्म भी कभी-कभी बन्धन अनुभव होते हैं।

भाग्यवती—क्यों नहीं, जब से आत्मा देह रूपी पिंजरे में प्रवेश करती है तो देह का भान आता है जिससे सभी देह अभिमानी बनते हैं और माया सुख, शान्ति, प्रेम, पवित्रता के खज़ानों को हप कर लेती है। सारा जीवन उन्हों के मन में देहधारियों की यादसमाई रहती है जिससे पल भर भी भगवान का ध्यान नहीं कर पाते।

अचला—माँ, यह बात तो बिल्कुल सत्य है। जो हमारा पालनहार है, मालिक है, उसे सभी भूल जाते हैं। दिन भर तेरे मेरे की बातों में ही लगे रहते हैं।

भाग्यवती—बेटी, वास्तव में इस देह रूपी **कुटिया** ने ही आत्मा को **घटिया** बनाया है। देह अभिमानी मनुष्यों को मान शान प्राप्त करने की इच्छा सदा रहती है। समाज में मेरी प्रतिष्ठा हो, रिश्तेदारी में शिष्टाचार हो इस व्यर्थ बन्धन के चक्कर में फँसे रहते हैं। यहाँ तक कि अपने जीवन का लक्ष्य-चरित्र का उत्थान हो—इसको भी भूले रहते हैं।

अचला—माँ, सचमुच इस देह तथा देह के सम्बन्धियों के बन्धन ने तो आत्मा का दिवाला निकाल दिया है। राजा से कइयों को रंक बना दिया है। हरेक ने **वास्तविकता** के बजाय **नास्तिकता** को अपनाया है।

चन्द्रपाल—बेटी, पुराने रीति रस्म का बन्धन भी कोई कम नहीं। पुराने रीति रस्मों को निभाना ही हमारा फर्ज है—समझकर कितने कर्ज़दार बने हैं। भिखारीपन के संस्कार इसी बन्धन की देन है। इस बन्धन के कितनों के घरों को उजाड़ दिया है।

अचला—हाँ पिताजी, इसमें कोई शक नहीं है। देखो मामूली दहेज की प्रथा ने समाज में क्या हलचल मचाई है।

चन्द्रपाल—अचला, दहेज की प्रथा ने तो सबका माथा मूँड लिया है। कितनों के जीवन को बरबाद किया है। देखो अपने चाचा का हाल क्या हुआ है, बिचारी अकेली बच्ची विद्या थी। शादी के बाद लालच के वश पति ने दहेज लाने बाप के घर वापस भेजा, लेकिन चाचा ने गंभीर परिस्थिति वश दहेज देने को इन्कार किया। चाचा न तो दहेज दे सका, न ही उसे शराबी पति के हवाले पुनः कर सका। अपने पिता की चिंतामय स्थिति को देखकर विद्या ने आत्महत्या करना ही उचित समझा। तो ये है इस बन्धन की करामात!

अचला—(आँखों से आँसू पोंछते हुए) तो माँ, आखिर ऐसी रीति रस्म समाज ने क्यों बनाई?

भाग्यवती—बच्ची, इसमें इसी का कसूर नहीं है। माया ने सभी की लोभ-लालच की वृत्ति बनाकर ये अजीब रस्म बनवाई है। सभी चाहते हैं मेरी बच्ची को अच्छा ससुराल मिले, सदा सुखी रहे इसलिए छिपते-छिपाते मजबूरी से यह प्रथा बन गई।

चन्द्रपाल—इसके बावजूद और जो भी पुरानी रीति रस्म बनी हुई है उन्हें निभाने के लिए कोई कम थोड़ी खर्च करना पड़ता है। तो ऐसे बन्धनों की आग में इन्सान ईंधन की तरह जल रहा है। अगर परिस्थिति वश कोई इन रीति रस्मों को पालन नही करता है तो समाज उसे समाज से निकाल भी देता है। इधर जाए तो खाई, उधर जाए तो कुआँ, जाए तो जाए कहाँ, यह हालत हर इन्सान की इस बन्धन ने की है!

अचला—पिताजी, कैसे इस समाज का पतन हो चुका है!

चन्द्रपाल—अचला, इतना ही नहीं, इन गुरु गोसाइयों के बन्धन ने भी कइयों को अपने जाल में फँसाकर रखा है।

अचला—(आश्चर्य से) पिताजी, क्या गुरु गोसाइयों का भी कोई बन्धन होता है?

चन्द्रपाल—आजकल के गुरु तो सभी अपने को भगवान कहलाने लगे हैं। सभी ने चेले बनाकर पैसे कमाने का धन्धा चालू किया है।

भाग्यवती—बेटी, अगर कोई किसी गुरु के पास

जाता है तो वे कोई मंत्र देकर बदले में बरबस पैसा लेते हैं। अन्य किसी भी गुरु के पास न जाने के वायदे का कायदा भी सिखाते हैं।

अचला—अगर किसी को पहले गुरु से दूसरे अच्छे गुरु की प्राप्ति हो गई हो तो ?

चन्द्रपाल—कुछ भी हो बेटी, वह उसे छोड़ दूसरा गुरु नहीं कर सकता है। अगर कोई करता भी है तो पहला गुरु उसे श्राप देने की धमकी देता है।

अचला—शायद इसी कारण दुनिया में इतने अथाह गुरु होते हुए भी धर्म की ग्लानि हो रही है।

चन्द्रपाल—बच्ची, इस कलियुग में सच्चाई नाम-मात्र भी नहीं रही है। गीता में भगवान के महा-वाक्य हैं—"जब धर्म की ग्लानि होती है तब सृष्टि पर अवतरित होता हूँ।" लेकिन पता नहीं वह गुरुओं का गुरु परम सद्गुरू कब अवतार लेंगे और सभी को इन देहधारी गुरुओं के पंजे से छुड़ायेंगे।

अचला—(करुणामय स्वर में) आखिर पिताजी, ये इन्तजार की घड़ियाँ कब खत्म होंगी और उस परमप्रिय परमात्मा का इस धरा पर अवतरण होगा। कब ये दुखी अशान्त मानव सुख की श्वास लेंगे। बिगड़ी को बनाने वाला कब इस बिगड़े हुए संसार को सुधारकर सभी के तकदीर का सितारा चमकाएगा !

चन्द्रपाल—देखो बच्ची, कब उस दया के सागर को दया आती है। जब उसकी मर्जी होगी तब ही तो वो सबकी अर्जी पास करेगा।

अचला—पिताजी, क्या ऐसी गंभीर परिस्थितियों को देखकर भगवान को दया नहीं आती है। चारों ओर अनेक समस्याओं के घेरे में फँसे हुए मनुष्य की करुणामय स्थिति को देखकर क्या उसका हृदय पिघलता नहीं है। समस्याओं के चपेटों से चीख मारने वाले बच्चों को देखकर क्या उसे रहम नहीं आता है !

चन्द्रपाल—बच्ची बात बिल्कुल ठीक है, इन सम-स्याओं से छुटकारा वो एक परमात्मा ही कर सकता है। क्योंकि सभी समस्याओं के बन्धन में ऐसे बन्धे हुए हैं जो लाख प्रयत्न करने से भी मुक्ति पा नहीं सकते हैं। सारा जीवन ही समस्याओं के संघर्ष में बीत रहा है।

अचला—पिताजी, क्या ऐसी समस्याओं भरी जिन्दगी किसको अच्छी लगती होगी ?

चन्द्रपाल—लेकिन कर भी क्या सकते बेटी, दिन प्रतिदिन जनसंख्या की वृद्धि ही समस्याओं का आह्वान करती है। पता होने पर भी मानव स्वयं पर नियंत्रण नहीं करता है जैसे की विकारों ने उसे एकदम अन्धा बना दिया है।

भाग्यवती—अचली बेटी, स्वभाव-संस्कार का बन्धन भी कोई कम नहीं है। मनुष्यों में अपने विकृत संस्कारों को परिवर्तन करने की शक्ति नहीं है जिससे चारों ओर झगड़े ही झगड़े नज़र आते हैं।

अचला—क्यों नहीं माँ, हरेक में देहअभिमान जैसे कि कूट-कूट कर भरा हुआ है। इसलिए सदा बद-लने के बजाय बदला लेने की भावना रखते हैं, चाहे उसमें दूसरों की मानहानि क्यों न हो।

चन्द्रपाल—बेटी, अगर सभी मनुष्यात्माएँ अपने निजी दैवी संस्कारों को धारण करेंगे तो ये सारा संसार ही बदल जाएगा। क्योंकि ये संसार बदला ही है सभी के विकृत संस्कारों से।

(अचानक बाहर से कार का हार्न सुनाई देता है)

भाग्यवती—देखो बेटी, कौन आया है···

अचला—(दरवाजा खोलते हुए) माँ, भैय्या आया है···भय्या···भैय्या···भैय्या कहते हुए अचला सुख-देव के बाँहों में समा गई।

(अचला के आँखों से स्नेह के मोती टपकते हैं)

सुखदेव—(बहन के आँसू पोंछते हुए) अचला चलो···चलो··· (अन्दर आकर माँ बाप के चरणों पर झुककर सुखदेव प्रणाम करता है)।

चन्द्रपाल—जीते रहो बेटे, बहुत सालों के बाद मेरे घर का चिराग वापस लौटा है। चन्द्रवती, सुखदेव को मिठाई तो खिलाओ···

भाग्यवती—आओ, मेरे लाल, मुख खोलो, खाओ ये मिठाई···

सुखदेव—(अपने नयनों से आँसू पोंछते हुए) माँ, माँ का प्यार कुछ अनोखा ही होता है। दुनिया में सब कुछ खरीद सकते हैं लेकिन माँ का प्यार नहीं !

भाग्यवती—क्यो नहीं बेटे, माँ तो आखिर माँ ही होती है, बच्चे को वह अपने दिल का टुकड़ा

समझती है।

(अचला बाजू में बैठकर रो रही है)

चन्द्रपाल—बेटी, अभी क्यों रो रही हो, अभी तो तुम्हारा भैय्या अमेरिका से आ गया है···।

अचला—पिताजी, आपको क्या अनुभव है भाई-बहन का प्यार कैसा होता है क्योंकि आपको तो बहन है ही नहीं।

चन्द्रपाल—अचला, इस बात में मैं तुम्हारे से ज्यादा अनुभवी हूँ। पूछो अपने दिल से जिस भाई को बहन न हो, क्या हालत होती होगी उसकी राखी के त्यौहार के दिन! तुम्हारा भय्या तो तुम्हारे से बचपन से राखी बन्धवा रहा है, कुछेक साल ही तो दूर रहा।

अचला—पिताजी, ४ साल से जब भी राखी का त्यौहार आता गया, इस अभागी बहन को भाई का राखी बाँधने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। मन ही मन रोकर आँसू पोंछती ही रही।

चन्द्रपाल—चलो कोई बात नहीं, अभी तो तुम भैय्या को राखी बाँधना।

सुखदेव—(गंभीर स्वर में) मीठी बहन, यह भैय्या भी मीठे बन्धन में बन्धा हुआ था जिससे आने में असमर्थ रहा। युनिवर्सिटी से छुट्टी लेने के लिए बहुत कोशिश करता था लेकिन जवाब एक ही मिलता था या तो छुट्टी लो या डिग्री लो।

अचला—भैय्या, हमारी भी काफी समय से इसी विषय पर चर्चा चल रही थी, इतने में ही आप पधारे।

सुखदेव—क्या बताऊँ बहन, पाश्चात्य देशों में धन-सम्पत्ति की कोई कमी नहीं है लेकिन हरेक मनुष्य बन्धनों के रस्सियों से ऐसा बन्ध चुका है जो छटना चाहे तो भी छुटकारा पा नहीं सकता। लेकिन हाँ, एक ऐसा भी बन्धन है जो अन्य सभी बन्धनों से स्वतंत्र बनाता है।

अचला—(आश्चय से) वो कौन-सा बन्धन है भैय्या···

सुखदेव—लगभग एक साल पहले की बात है, जब रक्षाबन्धन का त्यौहार था, उस समय मैं अपने मित्रों के साथ अमेरिका में एक रोड पर से गुजर रहा था। तो वहाँ के एक प्रसिद्ध हाल (Hall) के गेट पर एक सुन्दर बोर्ड लगा हुआ था जिस पर लिखा हुआ था Welcome, How To Get Free From All Bondages (सर्व बन्धनों से मुक्त कैसे हों।) उस बोर्ड को पढ़कर हम सभी ने अन्दर प्रस्थान किया तो वहाँ एक सफेद वस्त्र धारण किए ब्रह्माकुमारी बहन रक्षाबन्धन त्यौहार का रहस्य बड़े रोचक ढंग से समझा रही थी। हॉल में सभी श्रोतागण बड़े ध्यान से सुनने में मग्न थे। हम भी उसमें शामिल हुए।

अचला—(उत्सुकता से) भैय्या, क्या समझाया उस बहन जी ने?

सुखदेव—उस ब्रह्माकुमारी बहनजी ने सुनाया कि—

"रक्षाबन्धन यह पवित्रता का बन्धन है। यह अनोखा बन्धन अन्य सभी बन्धनों को समाप्त करता है। पवित्रता के सागर पिता परमात्मा आत्माओं रूपी बच्चों को पवित्रता के बन्धन में बान्धकर माया दुश्मन से रक्षा कराते हैं इसलिए इस त्यौहार का नाम 'रक्षा-बन्धन' है। इस पवित्रता के सूत्र को बांधकर अपने मन में यही प्रतिज्ञा करो कि तुम भारत की ही नहीं, सारे विश्व की हर नारी को बहन की दृष्टि से देखेंगे। इस श्रेष्ठ धारणा से ही हम सभी दुखदाई बन्धनों से मुक्त होकर परमात्मा शिव से सर्व सम्बन्धों के रस की अनुभूति कर जीवन को सदा के लिए सुख-शान्ति पवित्रता से सम्पन्न बना सकते हैं।"

अन्त में उन्होंने कहा कि परमात्मा शिव जो सर्व-आत्माओं के परमपिता हैं, भारत में आबू पर्वत महान तीर्थ पर अवतरित होकर सभी मनुष्यात्माओं को सहज राजयोग तथा सहज ज्ञान की शिक्षा द्वारा पावन बना रहे हैं।

अचला—भैय्या, क्या सचमुच भक्तों की पुकार सुन-कर भगवान सृष्टि पर आ चुके हैं?

सुखदेव—यह कथन की ही नहीं लेकिन मेरे अनुभव की बात है। उन्हों के प्रवचन सुनने के पश्चात मैं वहाँ के ब्रह्माकुमारी आश्रम में नियमित योगाभ्यास तथा ज्ञानस्नान करने जाता रहा। फलस्वरूप मेरा जीवन ही बदल गया। बुद्धि के दिव्यीकरण के साथ-साथ मन का शुद्धिकरण भी होता गया। और अभी वापस आते समय माउन्ट आबू स्थित

मुख्यालय में तीन दिन निवास किया। तब भी मुझे विभिन्न अलौकिक अनुभूतियाँ हुईं। अभी पुन: मैं रक्षाबन्धन का त्यौहार मनाने वहाँ जाऊँगा।

अचला—भैय्या, वो लोग रक्षा बन्धन कैसे मनाते हैं ?

सुखदेव—वहाँ राखी बाँधते समय आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करने की प्रतिज्ञा कराते हैं। और वास्तव में देखा गया है कि जो भी अनेक प्रकार के दुनिया में बन्धन हैं उन्हों का मूल कारण है ही—५ विकार। और स्वयं को इस प्यारे पवित्रता के बन्धन में बाँधने से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों पर पूर्णतया विजय प्राप्त की जाती है जिससे आनन्दमय बन्धनमुक्त जीवन का अनुभव होता है।

अचला—भैय्या, आप माउन्ट आबू रक्षाबन्धन मनाने कब जाओगे ?

सुखदेव—बहन, वैसे तो राखी का त्यौहार परसों ही है, इसलिए मुझे टिकिट रिजर्वेशन के लिए रेलवे स्टेशन जल्दी ही जाना होगा।

अचला—(गंभीर मुद्रा में) भैय्या, क्या इस पवित्रता के बन्धन को बांधने के लिए अर्थात रक्षाबन्धन मनाने, मैं भी आपके साथ आ सकती हूँ ?

सुखदेव—क्यों नहीं बहन, इससे और अच्छी बात क्या हो सकती है। यह बन्धन तो आपकी जीवनभर रक्षा करेगा।

अचला—तो भैय्या, मेरी भी अपने साथ टिकिट रिजर्व करना।

भाग्यवती—(उत्सुकता से) आप दोनों भाई-बहन जा रहे हैं, तो हम दोनों क्यों पीछे रहें। हम भी आपके साथ चलेंगे, बेटे, हम दोनों की भी टिकिट रिजर्व करना।

सुखदेव—(आश्चर्य से) माँ अवश्य, लेकिन ये मत भूलना कि ऐसे महान तीर्थ पर महान कर्त्तव्य के लिए टिकिट रिजर्व करने के साथ-साथ आप सभी का नई पावन सतयुगी दुनिया स्वर्ग में भी जाने का टिकिट रिज़र्व स्वत: हो जाएगा ! □□

आओ राखी बाँधें (पृष्ठ ७ का शेष)

के मार्ग पर चलता है। मन में उत्पन्न काम, क्रोध, ईर्ष्या व बदले की भावना भी हिंसा के ही स्वरूप हैं। और जहाँ ये मनोविकार हैं, वहाँ धर्म लुप्त है।

अत: आओ हम आज से मन की अग्नि को योगाग्नि से शान्त करें। धर्म की श्रेष्ठ शिक्षाओं से जीवन का शृंगार करें। धर्म को, जीवन सरल, तनाव-मुक्त व पवित्र करने का आधार बनायें। धर्म और जीवन एक हो जाएँ। ऐसा न हो कि धर्म पुस्तकों में हो और जीवन हिंसा व अशान्ति के वाम मार्ग पर। हमारा जीवन ही श्रेष्ठ धर्म हो ताकि पुन: मनुष्य धर्म की श्रेष्ठता को समझ सके और धर्म को जीवन में अपना सके।

तो इस प्रकार इस राखी के पर्व को हम गहन चिन्तन व स्वचिन्तन में रहकर मनायें। जीवन में धर्म के आचरणों को उतार लें। और मन की उधेड़ बुन, मन की चंचलता और हृदों की दीवारों से स्वयं को मुक्त करें ताकि शीघ्र ही धरती पर पुन: दैवी साम्राज्य की स्थापना हो।

□□

राखी कैसे मनाये ! (पृष्ठ ८ का शेष)

आज हमारा अपना स्वयं का अनुभव है कि ब्रह्माकुमारी बहिनें, जो हमें शिवबाबा का संदेश देने की निमित्त हैं, कितना हमारा उनका भाई-बहिन का पवित्र-रिश्ता है। पता भी नहीं चलता है कि वे स्त्री हैं या पुरुष। स्वार्थरहित पवित्र प्यार मिलता है। यह पवित्र रिश्ता तो योगी-संन्यासी भी नहीं निभा पाते और घर-द्वार छोड़कर वन में चले जाते हैं। लेकिन परम-पिता परमात्मा जो इस धरा पर फिर कल्प के बाद अवतरित हुये उन्हीं की शक्ति से हम गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल-पुष्प समान पवित्र रहते हैं।

आज परमात्मा की आज्ञा है—"पवित्र बनो ! योगी बनो !" परमात्मा इन्हीं ब्रह्माकुमारियों द्वारा हजारों-लाखों का हृदय परिवर्तन करा रहे हैं। कहा भी जाता है—"जिसका माझी है भगवान, उसका क्या कर सकता आँधी और तूफान।" तो प्रत्यक्ष रूप से हम परमपिता परमात्मा की आज्ञा सिरोधार्य कर भाई-बहिन के रिश्ते का नारा गुंजायें तो स्वर्ग (बकुण्ठ) बहुत शीघ्र आ जायेगा।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

देहरादून—प्राप्त समाचार के अनुसार सेवाकेन्द्र इन्चार्ज ब्र० कु० प्रेम बहन ने हरिद्वार के नामीग्रामी ३ महात्माओं से व्यक्तिगत मुलाकात की तथा उन्हें ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की कार्य विधि से अवगत कराया। सर्व प्रथम आप हरिद्वार तथा अन्य कई स्थानों के आश्रमों के अध्यक्ष स्वामी सच्चिदानन्द गिरी से मिली जो कि बहुत ही सुलझे हुए विचारों के हैं। लगभग २ घन्टे तक ज्ञान की वार्तालाप हुई। मंगला आश्रम के स्वामी देवनारायण गिरी से भी ज्ञान की वार्तालाप हुई। इसी प्रकार महन्त कर्णपुरी को भी ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

अजमेर—प्राप्त समाचार के अनुसार सेवाकेन्द्र की ओर से श्री नगर रोड पर चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन आधुनिक राजस्थान समाचार के प्रधान संपादक दिलीप जैन ने किया इस प्रदर्शनी से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

दिल्ली चांदनी चौक—समाचार मिला है कि दरियागंज में "मानव जागृति सम्मेलन" का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथी के रूप में बहन सुरिन्द्र जी ने किया। आप इस सम्मेलन से बहुत ही प्रभावित हुई। सुप्रसिद्ध समाज सेविका होने के नाते आपने ईश्वरीय विश्व विद्यालय से समय प्रति समय सम्पर्क रखने का वादा किया।

जामनगर—समाचार मिला है कि जामनगर में रणजीत रोड पर सजुबा गर्ल्स हाईस्कूल में ३ दिन के लिए प्रदर्शनी रखी गई जिसको अनेक आत्माओं ने देखा तथा लाभ उठाया। इसके अलावा कई स्थानों पर मृत्यु पर सेवा भी की गई। सिन्धी बहनों के सतसंग में भी सात दिन का कोर्स का प्रोग्राम भी मिला है कई स्थानों पर प्रोजैक्टर शो भी दिखाया गया।

मुजफ्फरपुर—सेवाकेन्द्र की ओर से औरंगाबाद में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के साथ राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया। दूसरी प्रदर्शनी ब्रह्मपुरा चौक पर लक्ष्मी नारायण के मन्दिर में लगाई गयी जिसका उद्घाटन कांग्रेस आई के अध्यक्ष भ्राता कैलाश साहनी जी ने किया। आप प्रदर्शनी देख-कर बहुत प्रभावित हुए और कहा कि मेरे मन में जो भ्रान्तियाँ थीं वह सब समाप्त हो गयीं।

मोरवी—प्राप्त समाचार के अनुसार मोरवी सेवाकेन्द्र पर राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें शहर के अनेक प्रतिष्ठित आत्माओं ने आत्म और परमात्म् अनु-भूति की। माधव के मन्दिर में साप्ताहिक कोर्स रखा गया इसके अलावा खरेड़ा गाँव में भी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

वारंगल—समाचार मिला है कि विजयवाड़ा सेवाकेन्द्र की ओर से मचिलीपटनम नामक शहर में विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के बीच एक दिन प्रेस कांफ्रेन्स भी रखी गयी जिसमें सभी समाचार पत्रों के मुख्य रिपोर्टस सम्मिलित हुए। सभी समाचार पत्रों में प्रदर्शनी का समाचार विस्तार पूर्वक छपा। प्रदर्शनी के पूर्व एक विशाल शान्ति यात्रा भी निकाली गई।

मुजफ्फरनगर—सेवाकेन्द्र की ओर से श्री गंगा दशहरा के अवसर पर शिव दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसको कई हजार आत्माओं ने देखा तथा लाभ उठाया। साहित्य द्वारा भी काफी सेवा की गयी। पतित पावन शिव बाबा का परिचय प्राप्त करके आत्मायें बहुत खुश हुईं।

अमरेली—सेवाकेन्द्र की ओर से वडिया में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के भ्राता जे० पी० शाह ने किया। प्रदर्शनी के साथ-साथ राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें अनेकानेक आत्माओं ने आत्मानुभूति एवं परमात्मानुभूति की। वडिया हाईस्कूल, चितल, व बाबरा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व स्लाईड शो के द्वारा ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

जूनागढ़—समाचार मिला है कि पाँडेचरी अरविन्द आश्रम के संचालक कवि श्री सुंदरम् जी जूनागढ़ के अग्रणी पत्र-कार श्री इच्छुभाई दवे के साथ सेवाकेन्द्र पर पधारे।

आपको आध्यात्मिक संग्रहालय दिखलाने के पश्चात राजयोग पर विशेष वार्तालाप हुआ। इनके अलावा कथाकार भ्राता रमेश भाई शुक्ल सेवाकेन्द्र पर पधारे, आपने भी आध्यात्मिक संग्रहालय देखने के पश्चात् अत्यन्त खुशी व्यक्त कीं।

बड़ौदा—समाचार मिला है कि बड़ौदा की खत्रीपोट में मृत्यु प्रसंग पर सप्ताह कोर्स का कार्यक्रम हुआ, उन्हों को विशेष "मृत्यु के पहले और बाद में क्या ?" इस विषय पर प्रकाश डाला गया। यहाँ के सेन्टर्स व गीता पाठशाला में योग की विशेश भट्टी रखी गयी। जिससे यहाँ के भाई-बहनों ने अच्छी अनुभूतियाँ प्राप्त कीं।

कलकत्ता—समाचार मिला है कि कलकत्ता म्यूजिम, अशुतोष मुकर्जी रोड सेवाकेन्द्र की माताओं ने अपने पुरुषार्थ को आगे बढ़ाने के लिए "१८ सोमवार" का एक दृढ़ व्रत लिया। १८ सोमवार को नित्य २ से ४ बजे तक योग भट्टी व धारणा की कलासेज चलीं। इस प्रोग्राम से माताओं ने विशेष अनुभव प्राप्त किए तथा अपने पुरुषार्थ को आगे बढ़ाया।

राँची—सेवाकेन्द्र की ओर से रथयात्रा के अवसर पर "जगन्नाथ मेले" में एक पंडाल लगाकर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों आत्माओं ने ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया। इसके अलावा डालटेनगंज गीता पाठशाला एवं राँची के विभिन्न स्थानों पर माउण्ट आबू में आयोजित "द्वितीय विश्व शान्ति सम्मेलन" की वीडियो फिल्म को वहाँ के भाई-बहनों को दिखाया गया। इससे वहाँ के लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

जगाधरी—समाचार मिला है कि एक विशेष "मानव एकता सर्व धर्म सम्मेलन" का आयोजन श्री कृपाल आश्रम पर किया गया। इस सम्मेलन में सर्व धर्म के विशेषज्ञों ने भाग लिया। ब्र० कु० बहनों को भी इस सम्मेलन में निमंत्रण प्राप्त हुआ। आत्मा और परमात्मा का परिचय सभी वक्ताओं व श्रोतागणों को दिया गया। इस तरह ईश्वरीय सन्देश देने का अच्छा अवसर मिला।

श्री गंगानगर—सूरतगढ़ के पास रंगमहल गाँव में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अलावा मण्डी गोलूवाला, मण्डी श्री विजयनगर, धर्मशाला श्री १०८ डाडा पम्पा जी में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। डूंगरपुर में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

पटना—पटना के छपरा उप-सेवाकेन्द्र की ओर से चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं सम्मेलन का आयोजन किया गया जिससे करीब पाँच हजार आत्माओं ने लाभ उठाया। राजयोग शिविर का भी प्रबन्ध किया गया था, इस अवसर पर शोभा यात्रा भी निकाली गयी थी।

जामखंडी—सेवाकेन्द्र की ओर से कडपट्टी और हंचनाल ग्राम में राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। राजयोग शिविर का उद्घाटन ब्र० कु० माधवसिंह हजारी द्वारा सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में ग्राम के चेयरमैन उपस्थित थे। गाँव के सब मुख्य-मुख्य लोगों ने लाभ उठाया।

रायपुर—छत्तीसगढ़ में ईश्वरीय सेवा का विस्तार देखते हुए सेवा को और आगे बढ़ाने हेतु जमीन ली गई है जिसका नाम रखा है अंतर्राष्ट्रीय राजयोग एवं आध्यात्मिक विकास केन्द्र। भूमि पावन का प्रोग्राम रखा गया था इस अवसर पर ब्र० कु० ओमप्रकाश जी क्षेत्रीय निर्देक इन्दौर जोन और मुख्य अतिथि थे भ्राता गोविन्द लाल वोरा सम्पादक दैनिक नव भारत रायपुर। इस अवसर पर ब्र० कु० किरण जी, इन्दौर भी पधारी थीं। शहर के कई प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित थे। इसका समाचार अखबारों में भी छपा।

दिल्ली शाहदरा—समाचार मिला है कि शिव मन्दिर ब्रह्मपुरी में साप्ताहिक कोर्स का कार्यक्रम रखा गया। जवाहर नगर में तथा जाट धर्मशाला तेलीवाड़ा में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी को देखने कौंसलर सतीश अग्रवाल जी भी आये थे। आप प्रदर्शनी देखकर बहुत प्रभावित हुए। इसके अलावा सेवाकेन्द्र पर एक स्नेह-मिलन का प्रोग्राम रखा गया जिसमें डी० के० जैन, चिन्तामणि शर्मा, जगदम्बा प्रसाद गौड़ तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे थे।

भुवनेश्वर—सेवाकेन्द्र द्वारा ओड़िसा में ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार तथा सेवा के लिए सन् १९७६ से ओड़िया भाषा में पत्राचार पाठ्यक्रश की शुरूआत की गई। अब तक करीब अनेकानेक व्यक्ति इस पाठ्यक्रम का लाभ उठा चुके हैं।

गत एक महीने से पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा ईश्वरीय सेवा में विशेष वृद्धि हुई है। इसका श्रेय ओड़िसा से प्रकाशित होने वाले दैनिक समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं को है। ओड़िसा के दैनिक समाज, प्रजातंत्र, धरित्री, मातृभूमि, दिनलिपि, दैनिक आशा, खबरकागज, कुरुक्षेत्र,

प्रगतिवादी, न्यूज आफ दि वर्ल्ड आदि तथा अन्यान्य मासिक पत्रिकाओं में गत एक मास से "ईश्वरीय ज्ञान का पत्राचार पाठ्यक्रम" के बारे में समाचार प्रकाशित हुए हैं जिनमें जनता से प्रजापिता ब्र० कु० ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा संचालित इस ईश्वरीय सेवा की व्यवस्था का लाभ उठाने का आह्वान किया गया है। उक्त सभी अखबारों के संवाददाताओं ने अपने शब्दों में पत्राचार पाठ्यक्रम का परिचय एवं विशेषता का वर्णन कर जनसाधारण को प्रोत्साहित किया है।

उक्त समाचारों के प्रकाशन से आकर्षित होकर प्रतिदिन १०-१५ नए आध्यात्म-प्रेमी आत्माएँ पत्राचार पाठ्यक्रम के लिए पत्राचार कर रही हैं।

आबू रोड—रेलवे कालोनी लोको लाइन में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का शुआरम्भ नगर पालिका के उपाध्यक्ष भ्राता मुरारीलाल सैनी ने फीता काटकर किया। इसके अतिरिक्त ग्राम रोहिग में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। ग्राम के सरपंच भ्राता सोताराम के विशेष आग्रह पर सार्वजनिक हिन्दू धर्मशाला में धर्मशाला के निर्माता पं० हीरालाल जी द्वारा झंडा फहराकर प्रदर्शनी का शुआरम्भ किया गया। इस अवसर पर ग्राम के उपसरपंच पत्रकार बन्धु एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कानपुर नया गंज—समाचार मिला है कि लखीमपुर खीरी मेन रोड जनता धर्मशाला के निकट बीच बाजार में जहाँ ग्रामोद्योग प्रदर्शनी सरकार द्वारा आयोजित की गई थी वहीं पर विश्व-नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। इसके अलावा गोला गोकर्णनाथ में कृषक समाज इन्टर कालेज के प्रांगण में व गाँव दीवान का पुरवा में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी जिससे अनेक आत्माओं ने ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया और लाभ उठाया।

विदेश सेवा समाचार

ट्रीनीडाड—प्राप्त समाचार के अनुसार ट्रीनीडाड में शाकाहारी भोजन बनाने की शिक्षा देने का कोर्स १० हफ्ते के लिए रखा गया है जिसमें ३५ आत्मायें भोजन बनाना सीख रही हैं। इसके साथ-साथ उन्हें आध्यात्मिक शिक्षा भी दी जाती है। वहाँ की सुपर मार्केट में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा गया जिससे हजारों आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

सूरीनाम—समाचार मिला है कि सेवाकेन्द्र से १७ कि० मी० दूर लिलीधोरप नामक गाँव में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वहाँ के स्कूल के प्रिंसिपल तथा स्टाफ ने प्रदर्शनी देखी। योग अभ्यास तथा साप्ताहिक कोर्स भी किया। क्वारा शहर के मन्दिर में भी कई आत्माओं ने कोर्स किया।

मनीला—सेवाकेन्द्र पर युवकों के लिए विशेष वर्कशाप का आयोजन किया गया जिसमें २० युवक भाई-बहनों ने भाग लिया। वर्कशाप का विषय था "विश्व के भविष्य के बारे में आपका निजी विचार"। सभी ने अपने-अपने विचार सुनाते हुए कहा कि अपने व्यक्तिगत तथा देश की समस्यायें ही इतनी है जो हम लोग विश्व के बारे में तो सोच भी नहीं सकते। ब्र० कु० बहनों ने उन्हें व्यक्तिगत जीवन का महत्व सुनाते हुए कहा कि व्यक्ति से समाज, समाज से देश और देश से विश्व बनता है। व्यक्ति विश्व से भिन्न नहीं हो सकता। हर व्यक्ति को विश्व भ्रातृत्व को सामने रखते हुए समस्या समाधान करना चाहिए। सारे विश्व के युवक इस विषय में एक होकर विचार करें तो विश्व की सर्व समस्यायें हल हो सकती हैं तथा उससे अपनी व्यक्तिगत एवं देश की भी समस्यायें हल हो जायेगी। इस तरह के विचार सुनकर सभी ने समय प्रति समय ऐसे वर्कशाप का आयोजन करने की माँग की है।

सिंगापुर—समाचार मिला है कि सिंगापुर निवासियों को समय प्रति समय विशेष लाट्री मिलती रहती है कोई न कोई विशेष आत्माओं की पालना मिलती रहती है। इस बार जून मास में सुदेश बहन जी लण्डन से व करुणा भाई जी मधुवन से पधारे थे। आप लोगों ने अपने निजी अनुभवों व बाप दादा के स्नेह भरे महावाक्यों से अनेक प्रमुख व्यक्तियों की ईश्वरीय सेवा की। कई स्थानों पर पब्लिक प्रोग्राम भी रखा गया। अनेक विषयों पर जगह-जगह प्रवचन व सेमीनार का आयोजन किया गया। इससे ईश्वरीय सन्देश देने का व प्रमुख व्यक्तियों की ईश्वरीय सेवा करने का अच्छा सुअवसर प्राप्त हुआ।

○○

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संजीव प्रिंटर्स, महिला कालोनी, गांधीनगर, दिल्ली-३१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70